।। ओ३म् ।।

पाक्षिक परोपकारी

• वर्ष ६० • अंक २१ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • नवम्बर (प्रथम) २०१८

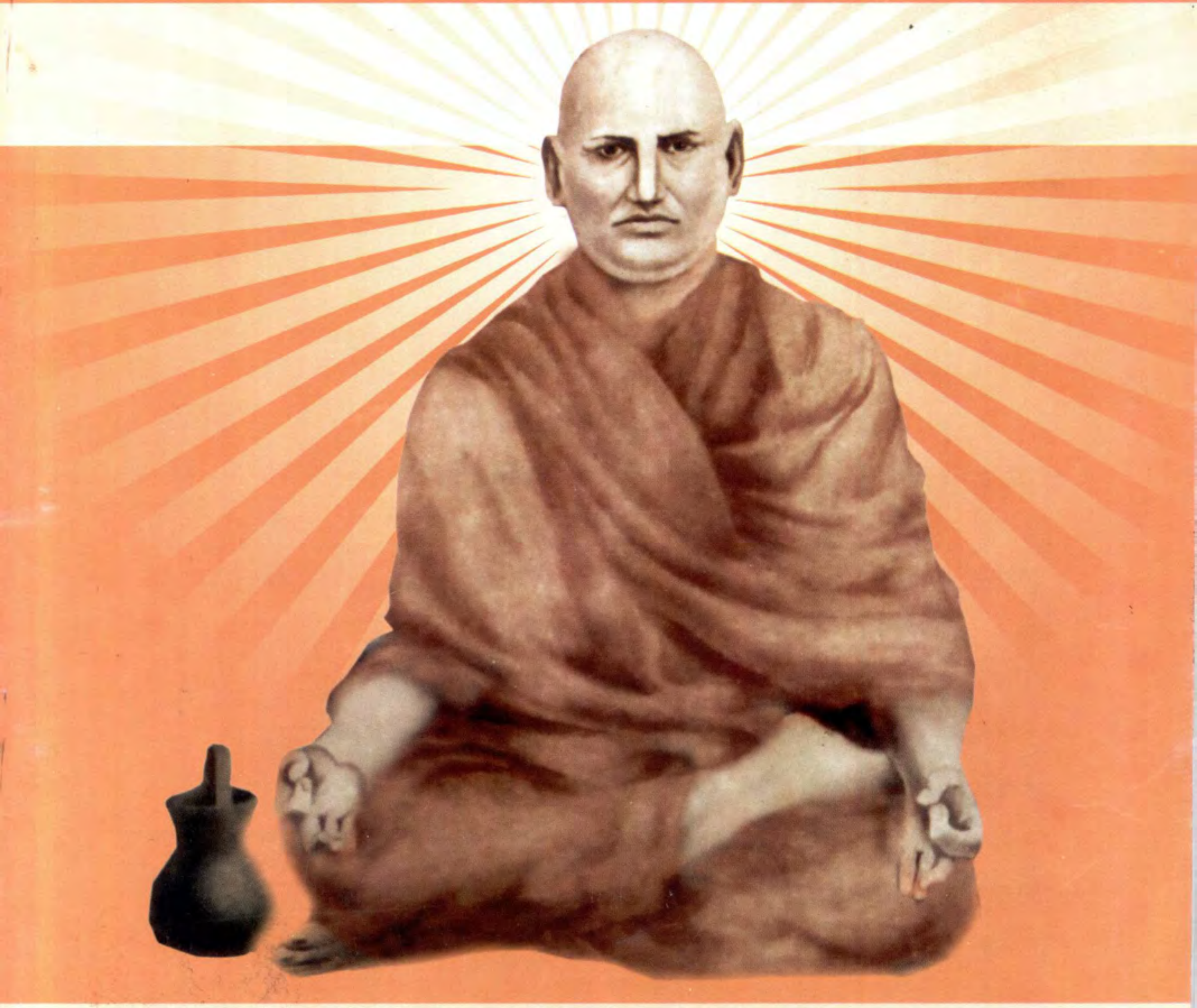

आर्यसमाज के संस्थापक एवं आदर्श आर्यावर्त देश के स्वप्नद्रष्टा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

१३५ वें बलिदान दिवस पर उन्हें हृदय से कोटि-कोटि नमन

देशभक्त श्री चांदकरण शारदा और परोपकारिणी सभा

जन्म
आषाढ़ कृष्ण द्वितीया वि.सं. १९४५

मृत्यु
कार्तिक शुक्ला एकादशी वि.सं. २०१४
तदनुसार ४ नवम्बर १९५७ ई.

महर्षि दयानन्द ने अपने दिवंगत होने से पूर्व स्व उद्देश्यों की पूर्ति हेतु परोपकारिणी सभा के रूप में २३ सदस्यों का एक न्यास (ट्रस्ट) स्थापित किया । इस सभा के द्वारा महर्षि द्वारा लिखित ग्रन्थों का मुद्रण एवं प्रकाशन होता है तथा देश-देशान्तरों एवं द्वीप-द्वीपान्तरों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ विविध योजनाओं को क्रियान्वित किया जाता है। रावसाहब रामबिलास शारदा जी के निधन के कारण हुये रिक्त स्थान पर दि. २१ मार्च १९३० को कु. चांदकरण जी शारदा परोपकारिणी सभा के सभासद् निर्वाचित हुये। सभा की विभिन्न गतिविधियों में शारदा जी का पूर्ण सहयोग रहता था। जब १९३३ में परोपकारिणी सभा ने महर्षि दयानन्द की निर्वाण अर्द्धशताब्दी मनाने का निश्चय किया तो शारदा जी इस समारोह में प्रचार मन्त्री बनाये गये। सभासद् बनने के पश्चात् आप सभा के २८ वार्षिक साधारण अधिवेशनों में सम्मिलित हुये तथा समय-समय पर सभा को उचित मार्गदर्शन देते रहे। शारदा जी के दिवंगत होने पर उनके सुपुत्र श्रीकरण जी शारदा ने अपने पुण्य श्लोक पिता का महत्त्वपूर्ण पुस्तक संग्रह परोपकारिणी सभा के श्रीमद्यानन्द पुस्तकालय को भेंट कर दिया। इस पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की सैकड़ों उत्तमोत्तम पुस्तकों के अतिरिक्त पुराने पत्र-पत्रिकाओं की बहुमूल्य संचिकायें, विभिन्न सभा-संस्थाओं के कार्य विवरण आदि दुर्लभ सामग्री का संग्रह है। राजस्थान के राजनैतिक एवं सामाजिक विकास के अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक-संग्रह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ६० अंक : २१

दयानन्दाब्द: १९४

विक्रम संवत्: कार्तिक कृष्ण २०७५

कलि संवत्: ५११९

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११९

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.
त्रिवार्षिक-५८० रु.
आजीवन (१५ वर्ष)-२००० रु.
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर
त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

नवम्बर प्रथम २०१८

अनुक्रम

०१. आर्य विदेशी थे : नया षड्यंत्र	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-१७	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. १३५ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		०८
०४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०९
०५. वेदगोष्ठी-२०१८		१३
०६. बौद्धदर्शन का आरम्भ	आ. उदयवीर शास्त्री	१५
०७. विज्ञान की ईश्वर सम्बन्धी...	रामनिवास गुणग्राहक	२०
०८. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२६
०९. संस्था समाचार		२७
१०. महर्षि दयानन्द के बलिदान के....	मोहनलाल तँवर	२९
११. ईश्वर पर अविश्वास के कारण....	कन्हैयालाल आर्य	३३
१२. शङ्का समाधान- ३६	डॉ. वेदपाल	३६
१३. आयुर्वेद द्वारा कैंसर की सफल....	आनन्ददेव शास्त्री	३८
१४. आर्यजगत् के समाचार		४०
१५. ऋषि मेला - २०१८ कार्यक्रम		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाए
www.paropkarinisabha.com →

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

आर्य विदेशी थे : नया षड्यंत्र

महर्षि दयानन्द ने आर्यों के भारतीय मूल का सिद्धान्त दिया था और बताया कि वैदिक सभ्यता के जनक आर्य थे। आर्य ही मानवमात्र के कल्याण के लिए वैदिक ज्ञान को विश्व के अन्यान्य देशों में ले गए। इसीलिए भारत को विदेशियों ने भी **सभ्यता और संस्कृति का हिण्डोला** कहा। विश्व की अन्यान्य संस्कृतियों में जब वैदिक सभ्यता के चिह्न मिलते हैं तो विदेशी ही नहीं, अपितु पाश्चात्यों के उच्छिष्टभोगी तथाकथित भारतीय इतिहासविद् भी आर्यों के विदेशी राग को पुन: अलापना शुरू कर देते हैं। उनका हृदय आर्यों को भारतीय मूल का मानने पर चीत्कार कर उठता है। जॉन मार्शल द्वारा सिन्धु सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की उद्घोषणा के बाद पुरातात्त्विक साक्ष्यों से मैक्समूलर जैसे विद्वानों की मान्यता को सिद्ध करने में विद्वानों का एक विशेष समूह लग गया। महर्षि के अनुयायी आर्यसमाज के विभिन्न विद्वानों ने, जिनमें पं. रघुनन्दन शर्मा, आचार्य वैद्यनाथ, पं. भगवद्दत्त आदि ने अन्त: और बाह्य साक्षों के आधार पर यह सिद्ध किया कि आर्य भारत के मूल निवासी थे।

अभी हाल ही में हरियाणा में सिन्धु सभ्यता के स्थल राखीगढ़ी की एक पुरातात्त्विक खोज ने इस मुद्दे को और भी उभारकर रख दिया, जिसमें सोशल मीडिया, सोशल एक्टिविस्ट, हिन्दू-विरोधी और हिन्दुवादी तथाकथित विचारकों ने हो-हल्ला मचा कर रख दिया। ध्यातव्य है कि 1963 में राखीगढ़ी की सिन्धु स्थल की खोज से ही इसकी खुदाई से प्राप्त चिह्न इसे भारत की मूल सभ्यता से जोड़ने का उपक्रम करते रहे। कभी कार्बन डेटिंग, कभी डीएनए और कभी अन्य जैनेटिक पद्धतियों के आधार पर तथाकथित बुद्धिजीवी अपनी पुरानी मान्यताओं को नये आलोक में सिद्ध करने के लिए आतुर हो गए हैं।

इतिहास का सर्वमान्य सिद्धान्त है कि एक इतिहासविद् को वैज्ञानिक की तरह वस्तुनिष्ठ होना चाहिए। तभी वह निरपेक्ष दृष्टि से उपलब्ध साक्ष्यों को परख कर किन्हीं निर्दिष्ट तथ्यों की ओर तार्किक दृष्टि से निष्कर्ष निकालने में सार्थक हो सकता है।

मैक्समूलर ने **इण्डिया** पुस्तक में लिखा है-"आर्य लोगों, यहाँ तक कि मनुष्यमात्र के विकास के अध्ययन के लिए विश्व में वेदों के समान अन्य कोई साधन महत्त्वपूर्ण नहीं है। मैं यह भी मानता हूँ कि जो कोई व्यक्ति स्वयं अपने, अपने पूर्वजों, अपने इतिहास अथवा अपने बौद्धिक विकास के बारे में जानने की जिज्ञासा रखता है, उसके लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन न केवल अपरिहार्य है और बल्कि उदार दृष्टि से अध्ययन के लिए यह बेबीलोनियाई अथवा फारसी राजाओं, यहाँ तक कि बाइबिल के जुडाह और इजराइल के इतिहास और उन राजाओं के कारनामे जानने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।" यहीं मैक्समूलर ने यह माना कि आर्यों का सर्वश्रेष्ठ एवं प्राचीन ग्रन्थ वेद है। यह सर्वविदित है कि आर्य भारत से ही विश्व में वैदिक धर्म के उदात्त विचारों को लेकर गए। कालान्तर में विश्व की विभिन्न भाषाओं में वेदों के शब्द देखने से लोगों में यह भ्रम पैदा हुआ कि भारत में आर्य बाहर से आए। परतन्त्रता की स्थिति में अंग्रेजों ने बौद्धिक कुटिलतापूर्वक आर्यों को विदेशी घोषित कर यह प्रयास किया कि जब आर्य विदेशी हैं तो अंग्रेज भी विदेशी हैं, इसीलिए उन्हें भारत से निकालने का क्या औचित्य है? आर्यों को एक प्रजातीय समूह होने के विषय में भारोपीय भाषा का समूह मानने का विचार विलियम जोन्स ने दिया था। इसे हुल्श ने आर्यों के स्थान को जर्मनी में बताया, तो श्रेडर ने लिथुएनिया को बताया। त्रिपोल्जे और पोकोर्नी ने स्टेपीज को माना, तो नेहरिंग ने दक्षिणी रूस को माना। गाइल्स ने डेन्यूब नदी की घाटी को माना, तो मेयर ने पामीर के पठार को स्वीकार किया। महर्षि दयानन्द ने पामीर के पठार अर्थात तिब्बत से मानव-उत्पत्ति का जो विचार वेदों के आधार पर दिया है उसे मेयर ने स्वीकार किया है।

भारतीय विद्या भवन की **द वैदिक एज** पुस्तक की मान्यता में आर्यों को भारत से बाहर से आया हुआ माना और बाद में डी.एस. त्रिवेदी, अविनाशचन्द्र दास, गंगानाथ झा, एल.डी. कल्ला, राजबली पाण्डे, सम्पूर्णानन्द, के.एम. मुंशी और ए.डी. पुसाळकर सहित विद्वानों ने आर्यों के भारतीय मूल के विचार को स्वीकार किया।

आश्चर्य का विषय है कि स्वतंत्रता के बाद भी पाश्चात्य चिन्तन के आधार पर निर्भर भारतीय इतिहासकारों ने भी आर्यों को एक प्रजातीय समूह मानकर विदेशी मूल का माना। जबकि यह अपेक्षा थी कि अब स्वतन्त्र रूप से भारतीय विचारधारा के स्रोतों के आधार पर निष्पक्ष विचार किया जाएगा।

अमेरिकन कौंसिल ऑफ वैदिक एस्ट्रोलॉजी के संस्थापक डेविड फ्रावले और **हारवर्ड मेडिकल स्कूल** के जैनेसिस्ट्स वैज्ञानिक डैविड राइक ने हड़प्पा सभ्यता को वैदिक सभ्यता के निकट लाने का प्रयास किया। वहीं जेएनयू की पूर्व प्रो. रोमिला थापर वैदिक सभ्यता और सिन्धु सभ्यता को पृथक् मान कर आर्यों के विदेशी मूल के मत को स्वीकार करती हैं।

अभी की खुदाई में राखीगढ़ी में साढ़े चार हजार वर्ष पुरानी सभ्यता प्राप्त हुई बताई जाती है। इसमें सात टीले पाये गये, जिनकी खुदाइ की गई। भाषाविद् जीनोम तथा कार्बन डेटिंग द्वारा इसके जो तथ्य घोषित हुए हैं वे सभी चौंकाने वाले हैं। भारतीय स्रोतों के आधार पर इसकी पहचान इस तथ्य पर अधिक निर्भर है कि भारत में आर्य सभ्यता की जितनी भी सोच प्रारम्भ हुई उसका अभिप्राय पूर्वाग्रह से ग्रस्त अवश्य रहा। अन्यथा हजारों वर्षों की सुदीर्घ परम्परा की वैदिक संस्कृति में यह कहना कि भारत के आर्य विदेशी थे, यह तथ्यों से परे की घटना द्योतित होती है।

राखीगढ़ी में प्राप्त ४५०० वर्ष पुराने कंकाल की विवेचना से ही सबसे अधिक षड्यंत्र एवं दुर्भावना से पूर्ण टिप्पणियाँ प्राप्त हो रही हैं। भारतीय इतिहास की सुदीर्घ परम्परा और ज्ञान की उर्वर भूमि के कालखण्ड को भारतीयों से दूर कर विषमतामूलक टिप्पणी आर्यों के विरुद्ध करना, इसी से षड्यंत्र की गंध आती है। क्योंकि डीएनए के नाम पर जो जाँचें की गई हैं वे जाँचें भारत की प्रकृति और आर्यों के उदात्त मानवीय विचारों के बिल्कुल विपरीत हैं, क्योंकि पाश्चात्य चिंतकों का तथ्य-चयन और उद्देश्य निश्चित रूप से भारत की परम्पराओं का विध्वंस और भ्रम फैलाना रहा है। भगवान सिंह जैसे विद्वानों का यह कहना उचित है कि **''हमारे मूर्धन्य चिंतक पश्चिमी ज्ञान की ढरकी बन जाते हैं और उलट कर वही ज्ञान दूसरों को पिलाने लगते हैं।''** इसलिए आर्यों के विषय में राखीगढ़ी के निष्कर्ष उसी सोची-समझी चाल की अभिव्यक्ति हैं जिसमें भारतीय मूल को विदेशी स्वीकार कर स्वयं भारतीयों को भी अपने मूल से काटने की योजना है।

अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि वैदिक सभ्यता और सिंधु घाटी सभ्यता में अत्यधिक साम्य है और जहाँ वैषम्य हैं वह अनुसंधान का विषय है। आर्यों के भारतीय मूल का विषय राजनीतिक ही नहीं, वह भारतीय संस्कृति और अस्मिता से जुड़ा हुआ प्रश्न है जिसने इतने विशाल कालखण्ड में भी अपने मूल्यों को खोया नहीं है। आर्य ग्रन्थों के प्रमाण विदेशी विद्वानों और उनके अनुयायियों को पचते नहीं है। इसीलिए राखीगढ़ी के उत्खनन के बहाने वामपंथी और उनकी विचारधारा के बौद्धिक दास इतिहासविदों द्वारा भारतीय इतिहास, संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान-परम्परा के विरुद्ध षड्यंत्र किया जा रहा है, ताकि युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, वैज्ञानिक सोच, साहित्य और व्याकरण पर गर्व करने लायक न रह सके। यह आर्यसमाज को स्वीकार्य नहीं। अत: इसका विरोध प्रत्येक स्तर पर किया जाना अपेक्षित है।

हमारा निश्चित मत है कि आर्यों की वैदिक सभ्यता विश्वव्यापी रही है। समस्त भूमण्डल में आर्यों का प्रसार भारतभूमि से ही हुआ है, और सुदीर्घावधि में सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक परिवर्तनों के कारण विदेशों में विकृत संस्कृति, भाषा और मत-मतान्तरों का जन्म हुआ। इनमें इतना महान् परिवर्तन हो चुका है कि विश्व की मूल संस्कृति और सभ्यता से इन नवीन मत-पन्थों की कड़ियों को जोड़ना दुष्कर-सा प्रतीत होता है। राखीगढ़ी के निवासियों का डी.एन.ए. किसी से भी मेल क्यों न खाता हो, परन्तु उनके अवशेष भारतभूमि पर ही पाये गए हैं, और यह नहीं भूलना चाहिए वैदिक संस्कृति, सभ्यता और धर्म विचार-प्रधान हैं। शारीरिक संरचना एवं तदनुसार बाह्य शाररिक रूप-रंग इत्यादि आयुर्वेद और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से महत्त्व रखते हैं, विचारशक्ति से नहीं। मुनि अष्टावक्र और ऋषि वेदव्यास इत्यादि का शरीर-सौष्ठव प्रशस्त नहीं था, परन्तु उनकी विचारशक्ति प्रबल और महत्त्वपूर्ण थी। आर्यों का गौरवर्ण होना, घुँघराले बालों वाला होना, तीखी नाक वाला होना इत्यादि कल्पनाएँ पाश्चात्यों के मिथ्या सिद्धान्तों की देन हैं। गर्भाधान, खान-पान इत्यादि के संस्कारों के कारण वैदिकधर्मी आर्यजन सुन्दर, स्वस्थ अवश्य होते थे, परन्तु इतर रूप-रंग और स्वास्थ्य वाले वैदिकधर्मी नहीं होते थे, ऐसा मानना मूर्खता, अज्ञान और दुर्भावना मात्र है। ईरानी, कश्मीरी, अफगानी इत्यादि जन अपनी भौगोलिक स्थितियों के कारण गौरवर्ण, सुन्दर होते हुए भी आचार-विचार और धार्मिक दृष्टि से कतई आर्य नहीं हैं। हाँ, उनके पूर्वज वैदिकधर्मी अवश्य थे। विभिन्न डी.एन.ए. वाले वैदिकधर्मी आर्य हो सकते हैं और एक ही डी.एन.ए. वाले वैदिकधर्मी नहीं भी हो सकते हैं। अत: यह विचार पाश्चात्यों और वामपंथियों का षड्यंत्र मात्र है कि आर्य एक नस्ल (Race) है, जिनका रूप-रंग और बाह्य शारीरिक गठन एक-सा होता है। इसके उलट हमारा मानना है और यह इतिहास एवं शास्त्रसम्मत है कि **आर्य** विचारों को प्रधानता देने वाला, वैदिक धर्म को मानने वाला, श्रेष्ठ जनों का समूह है, जिनमें संस्कार, सभ्यता, आचार-विचार इत्यादि में न्यूनाधिक रूप से एकता या समानता होती है। ऐसे व्यक्ति या समूह विश्व के किसी भी स्थान पर हो सकते हैंऔर वे स्वयं श्रेष्ठ होते हुए संसार को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करते हैं। उनका सार्वभौम सिद्धान्त है-

- संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

- कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्। - दिनेश

मृत्यु सूक्त-१७

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्या

परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां, यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि, मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्।।

हम ऋग्वेद के १० वें मण्डल के मृत्यु-सूक्त पर विचार कर रहे हैं। पिछली चर्चा में सरलता से समझाने के लिये मृत्यु के संबन्ध में श्री कृष्ण जी ने जो विचार गीता के दूसरे अध्याय में अर्जुन को समझाते हुए किया है, उसको देखा। उसमें श्री कृष्ण जी कहते हैं कि ये जो सत्तायें हैं वो कभी नष्ट नहीं होती हैं। जो 'है' वो कभी 'नहीं है' नहीं होता, वो केवल हमको बदलता हुआ दिख रहा है। इसके भी दो ही रूप हैं-एक तो बिल्कुल नहीं बदलता, एक कभी-कभी बदलता है।

शरीर जड़ है और इसके बदलते रहने से हम कभी दु:खी नहीं होते। उन्होंने एक पंक्ति में कहा-**देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति**। कहते हैं कि देहिनोऽस्मिन् यथा देहे-कोई मनुष्य, कोई प्राणि, जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्य होगी और इस बीच में वह एकरूप नहीं रह सकता। जन्म के दिन से, गर्भ के दिन से उसके अन्दर परिवर्तन होना प्रारम्भ होता है और दिन प्रतिदिन वो परिवर्तन होते-होते एक दिन मृत्यु के रूप में चला जाता है। तो जैसे प्रत्येक दिन के परिवर्तन से हमें कोई असुविधा नहीं होती, कोई कष्ट नहीं होता। थोड़ा-सा जब हमारी समझ में आने लगता है तो उस बदलाव को हम एक नाम दे देते हैं- बचपन, यौवन, बुढ़ापा।

एक बालक एक दिन में तो जवान नहीं होता, लेकिन वो बालक जिस दिन से पैदा हुआ और जवान होने तक हम कहते हैं यह बालक है। वो जवान भी हर दिन एक जैसा नहीं रहता, धीरे-धीरे उसमें बदलाव आता है, उसी जवान को एक दिन हम कहते हैं, यह बूढ़ा हो गया। तो श्री कृष्ण जी कह रहे हैं कि बिल्कुल वैसे ही समझो, यह बूढ़ा था, बूढ़े के बाद क्या होगा? कुछ नहीं- एक परिस्थिति मृत्यु है दूसरी परिस्थिति फिर जन्म है। '**देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा**'- यह जो देही है, यह मनुष्य है। इसके शरीर में कुमारावस्था, युवावस्था, जरावस्था जितनी स्वाभाविक है, सहज है, तथा **देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।**

इसमें हमारे लिए समझने की बात क्या है कि यह जो शरीर है, समाप्त होने के बाद भी समाप्त नहीं होता। हम बाल्यावस्था से युवावस्था में जाने पर क्यों नहीं रोते? इसलिए कि बाल्यावस्था समाप्त होने पर भी हम समाप्त नहीं हुए। युवावस्था के बाद जरावस्था आ गई तो भी हम नहीं रोते, हम इसलिए नहीं रोते कि हम फिर भी हैं, अवस्था नहीं रही तो क्या हुआ। बिल्कुल यही परिस्थिति यदि हमारे मन में आ जाए कि मृत्यु हुई तो क्या हुआ, हम तो हैं। वो जो हम हैं चेतनस्वरूप, आत्मस्वरूप-उसके बाहर कुछ भी परिवर्तन होता रहे वह मात्र परिवर्तन है, चाहे युवावस्था से जरावस्था का हो, या मृत्यु से जन्म का हो, या जन्म से मृत्यु का हो। यह कितना स्वाभाविक है? उन्होंने कहा-

जातस्य हि ध्रुवोमृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्ये अर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।

देखो, संसार में हर भौतिक पदार्थ के साथ एक नियम लगता है। वह चीज कहीं आप बनती हुई कहते हो, कहीं पैदा होती हुई कहते हो, कहीं रचना कहते हो, पर प्रक्रिया एक ही है। अर्थात् किसी का प्रारम्भ होता है, विकास होता है, विनाश होता है, तो हमको एक बात तो सबको समझ में आती है कि जो पैदा हुआ है वह मरेगा, जो बना है वह बिगड़ेगा, जो रचा गया है वह गिर जाएगा। लेकिन यह आधा है। यह जो सामने का रूप है वह दिखाई देता है और किसी भी वस्तु का पीछे का रूप हमें दिखाई ही नहीं देता। हमको अपना भी सामने का रूप दिखाई देता है, पीछे का नहीं दिखाई देता। चाँद-सूरज के सामने का रूप दिखाई देता है इनका पीछे का भाग नहीं दिखाई देता। तो

वैसे ही **किसी मनुष्य का जन्म से मृत्यु तक का रूप दिखाई देता है, लेकिन मृत्यु से जन्म की यात्रा हमको दिखाई नहीं देती।**

दो परिस्थितियाँ हो सकती हैं, या तो यह यात्रा है ही नहीं और है तो दिखाई नहीं देती। यदि हम यह स्वीकार करें कि यह यात्रा है ही नहीं तो हर जन्म को नया मानना पड़ेगा। फिर हर जन्म का प्रारम्भ एक जैसा होना चाहिए, लेकिन ऐसा तो है नहीं। सबके जन्म में अंतर है। अंतर कैसे है? मुझमें और मेरे पिता में अंतर है, उनके जन्म का समय अलग है, मेरे जन्म का समय अलग है, उनका स्थान अलग है, मेरा स्थान अलग है, उनके माता-पिता अलग हैं, मेरे माता-पिता अलग हैं। यह जो अन्तर उसके बाद आया यह क्यों आया? यदि सबका प्रारम्भ एक है तो जैसे दौड़ की प्रतियोगिता में हम सबको समान रूप से खड़ा करते हैं और फिर दौड़ाते हैं, उसके बाद फिर हम कहते हैं यह पहला है, दूसरा है, तीसरा है, चौथा है, अंतिम है। लेकिन संसार में तो हर व्यक्ति अलग-अलग दौड़ रहा है। ये अलग-अलग दौड़ बीच में तो आ सकती है, क्योंकि कोई यदि किसी दौड़ को बीच में देखने के लिए आया है तो उसे हर व्यक्ति अलग-अलग दौड़ता हुआ दिखाई देगा और वह अलग-अलग दौड़ यह बता रही है कि दौड़ बहुत पीछे से हो रही है और उनकी क्षमता अलग-अलग है।

वही स्थिति मनुष्य के जीवन के साथ है। पैदा होने से मरने तक की यात्रा दिखाई देती है लेकिन हर एक के पैदा होने का समय अलग होता है, पैदा होने की परिस्थिति अलग होती है, पैदा होने का स्थान, पैदा होने के जीवन की स्थिति कि कुत्ता है, गधा है, घोड़ा है, आदमी है। यह सब एक होते तो एक जैसे होते, एक साथ होते, सबके सुख-दु:ख समान होते, सबको हानि-लाभ समान होता, सबकी प्रसन्नता-अप्रसन्नता समान होती, सब अपने को एक जैसा अनुभव करते। लेकिन संसार में ऐसा है नहीं। एक आदमी जन्म पाकर प्रसन्नता के वातावरण में बड़ा होता है। एक भोजन-छादन, सहयोग, साथ, सेवा अद्‌भुत तरह की प्राप्त करता है, दूसरा इन सबसे वंचित होकर रहता है। तो यह जो प्रारम्भ है, यह भिन्न-भिन्न कैसे हो सकता है। प्रारम्भ सबका समान है, एक है, एक दिन है तो एक जैसा होगा। लेकिन एक जैसा नहीं होता। यह एक जैसा नहीं होता, यह बता रहा है कि पिछली इनकी जो यात्रा है वह आज प्रारम्भ नहीं हुई है, वह यात्रा का मध्य है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च- जितना बड़ा सच यह है कि जो पैदा हुआ है, जो उत्पन्न हुआ है वो मरेगा, समाप्त होगा, विनष्ट होगा, उतना ही सच यह भी है कि जो विनष्ट हुआ है, जो हमारे सामने मरा है वह पैदा भी होगा। शरीर तो मिट्टी में मिला है फ़िर मिट्टी से कुछ भी बनेगा, बनता रहेगा। शरीर बनेगा या घड़ा बनेगा यह अलग बात है। जो गया है, जिसे हम जीवन कहते हैं, चेतना कहते हैं, आत्मा कहते हैं, उसकी यात्रा आधी अधूरी है, यात्रा का उसने अपना वाहन छोड़ दिया है तो वाहन बदल लेगा, दूसरा ले लेगा।

जैसे हमें दिखाई देता है कि प्रातःकाल सूर्य निकला, दिन में ऊपर तक गया, शाम को नीचे चला गया, छिप गया, अस्ताचल में चला गया। उधर का हिस्सा देखा तो नहीं है। दोबारा सूरज वहाँ से तो लौटकर नहीं आता जहाँ छिपा है। इसीलिए दूसरी यात्रा फिर वहीं से प्रारम्भ होती है जहाँ कल प्रारम्भ हुई थी। इससे पता लगता है कि पीछे की यात्रा वापस नहीं आयी है, नए सिरे से चलती है। जैसे किसी चक्र में आधे को आप देखें तो आधी यात्रा आपके सामने है और आधी आपसे ओझल है। आज हमने सूर्य को उदय होते हुए देखा, अस्ताचल में गया, लौटकर अस्तालचल से उदयाचल की ओर नहीं आता, वैसे ही किसी जीवात्मा का जन्म शैशव से ही होता है और मृत्यु वृद्धावस्था से, बीमारी से, रोग से, शोक से, बड़े होने से होती है, जन्म के बाद होती है। उसकी यात्रा वापस उसी रास्ते नहीं लौटती कि कोई बूढ़ा वापस जवान हो, जवान से फिर बालक हो और बालक से फिर जन्म की ओर जाए, ऐसा नहीं होता। यात्रा का क्रम नहीं बदलता, इसलिए वापस उसकी यात्रा फिर जन्म पर आती है।

यह चीज क्या प्रमाणित करती है, सिद्ध करती हैं कि **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः**-जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु अनिवार्य है, और **ध्रुवं जन्म मृतस्य च**- इस आधे से हमारा परिचय नहीं है, इसलिए आधे के बारे में हमको

शेष भाग पृष्ठ संख्या ४१ पर...

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३५ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक १६, १७, १८ नवम्बर २०१८, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३५वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन १८ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार होंगे।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १० नवम्बर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। १६, १७, १८ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। १६ नवम्बर को परीक्षा एवं १७ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १० नवम्बर, २०१८ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हल्की ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३५वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री सत्यपालसिंह-केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, श्री सोमपाल शास्त्री- पूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, श्री अरुण कुमार 'आर्यवीर', श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री प्रियव्रतदास एवं श्रीमती शन्नो देवी-भुवनेश्वर, श्री विद्यामित्र ठुकराल-दिल्ली, श्री ओमप्रकाश गोयल-पानीपत, श्री हरिसिंह सैनी-हिसार, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सज्जनसिंह कोठारी-लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, आचार्य विद्यादेव, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, पं. रामनिवास गुणग्राहक-श्रीगंगानगर, डॉ. विनय विद्यालंकार-प्रधान आ.प्र.स. उत्तराखण्ड, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य-नोएडा, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. वेदपाल-मेरठ, आचार्या सूर्या देवी-शिवगंज, आचार्या धारणा 'याज्ञिकी', आचार्या प्रियम्वदा 'वेदभारती'-आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री कन्हैयालाल आर्य-गुरुग्राम, डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी'-दिल्ली, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, मा. रामपाल आर्य-प्रधान आ.प्र.स. हरियाणा, श्री उमेद शर्मा-मन्त्री आ.प्र.स. हरियाणा, डॉ. महावीर मीमांसक-दिल्ली, श्री विजय शर्मा- भीलवाड़ा, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, डॉ. जगदेव-रोहतक, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'- चण्डीगढ़, पं. देवनारायण तिवारी-कोलकाता, पं. सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	ओम् मुनि
संरक्षक	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

ऋषि दयानन्द जी को 'महर्षि की उपाधि' किसने दी?- ऑस्ट्रेलिया से एक मेधावी आर्य युवक श्री सुधीर भाई ने एक प्रश्न पूछा है कि ऋषि दयानन्द जी महाराज को उनके बलिदान के उपरान्त महर्षि की उपाधि आर्यसमाज ने दी अथवा किसी और संस्था या व्यक्ति ने दी? ऐसा प्रतीत होता है कि मिर्ज़ाई मत द्वारा देश में, विदेश में, महर्षि दयानन्द, पं. लेखराम तथा आर्यसमाज के विरुद्ध नेट पर किये जा रहे विषैले प्रचार से यह शरारतपूर्ण प्रश्न या आक्षेप श्री सुधीर भाई के पास पहुँचा है या पहुँचाया गया है। इस प्रश्न का युक्तियुक्त सप्रमाण उत्तर देने से पहले सुधीर भाई का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है। आप गुजरात के प्रसिद्ध समाजसेवी ऋषि-भक्त श्री शिवगुण बापू वेलाणी के पौत्र हैं और घाटकोपर मुम्बई समाज के प्रधान श्री दिलीप भाई के सबसे छोटे भाई हैं।

इस आक्षेप अथवा प्रश्न को सबसे पहले एक मिर्ज़ाई लेखक ने अपनी एक आपत्तिजनक पुस्तक में उठाया था। श्रद्धेय लक्ष्मणजी आर्योपदेशक ने इसका उत्तर तभी अपनी पुस्तक 'निष्कलंक दयानन्द' में दे दिया। फिर 'महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन चरित्र' ग्रन्थ में इस विनीत ने तथ्यों व प्रमाणों के आधार पर प्रसंगवश एक से अधिक बार दिया है।

यह लिखना व कहना ही शरारतपूर्ण है कि यह उपाधि मास्टर आत्माराम जी अथवा किन्हीं अन्य आर्यसमाजियों ने महर्षि के बलिदान के पश्चात् उन्हें दे दी। 'महर्षि' 'मुनि' 'महात्मा' 'योगी' 'योगेश्वर' आदि शब्द न कोई उपधियाँ हैं तथा न तो कोई व्यक्ति ये उपाधियाँ देता है और न ही कोई संस्था किसी को मुनि, महात्मा और ऋषि बना सकते हैं। किसी महापुरुष का आचरण, उसकी सेवायें तथा जीवन की शुद्धता पवित्रता ही उसे ऊँचा उठाती व बनाती हैं।

अब जब यह प्रश्न उठा ही दिया गया है तो हम यह बता दें कि महर्षि के जीवनकाल में ही आर्यसमाजी ही नहीं समस्त हिन्दू समाज (कुछ घोर विरोधी अपवाद हो सकते हैं) उन्हें ऋषि और महर्षि मानता व कहता था। इसका प्रमाण कोई चाहे तो ऋषि के घोर निन्दक ज्ञानी दित्त सिंह जी लिखित पुस्तिका **'स्वामी दयानन्द से मेरे तीन शास्त्रार्थ'** (बहस) पढ़ के देख लें। ज्ञानी जी ऋषि के समकालीन व्यक्ति थे। आपने उसमें स्पष्ट लिखा है कि हिन्दू स्वामी दयानन्द को महान् विद्वान्, ऋषि और महर्षि मानते व बताते थे। इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है?

उस काल के प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र 'The Hindu Patriot' (१४ फरवरी, १८७०) ने काशी शास्त्रार्थ के बाद जो समाचार दिया था उसमें लिखा था, "The Rishi like apperance of the venerable Pandit, his cheerful countenance and child like simplicity made on our minds an impression never to be effaced."

इस अवतरण में अंग्रेजी भाषा के पत्र ने महर्षि का गुणकीर्तन करते हुये संस्कृत के ऋषि शब्द का प्रयोग ही नहीं किया, अपितु स्पष्ट लिखा है कि उनकी आकृति ही ऋषियों जैसी थी। तब तक तो आर्यसमाज की स्थापना ही नहीं हुई थी।

सर सैयद अहमद ख़ाँ ने टंकारा में शिवरात्रि की रात को मूलशंकर जी के हृदय में उठे प्रश्न कि यह जड़ मूर्ति विश्व का सर्जनकर्त्ता, नियन्ता, न्यायकारी परमेश्वर नहीं हो सकती। यह तो शिव नहीं शव है- इस प्रश्न को-मन में उठी शंका को सर सैयद अहमद ख़ाँ ने 'इल्हाम' (ईश्वरीय ज्ञान) बताया है। आपने लिखा है कि उस रात्रि में उठा यह प्रश्न और यह ज्ञान होना कि यह भगवान् नहीं जड़ पत्थर है। यह ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश (बोध) नहीं तो क्या था? ईश्वरीय ज्ञान का आविर्भाव जिसके हृदय में होता है उसको ऋषि ही तो माना जाता है। सो, सर सैयद के शब्द भी उनके ऋषि-महर्षि होने की साक्षी देते हैं।

इस समय यहाँ और अधिक प्रमाण न देकर हम यही निवेदन करेंगे कि ऋषि जी का मान, सम्मान और स्वागत करते हुये उनको अनेक स्थानों पर ऋषि, महर्षि कहा गया

था। हमने यत्र-तत्र 'ऋषि जीवन' में ऐसे स्थल hightlight कर दिये हैं। जिस मिर्ज़ाई ने यह शगल छेड़ी, उसने अपने कथन का प्रतिवाद स्वयं ही यह कहकर कर दिया कि एक बार जब भक्तों ने उन्हें ऋषि महर्षि कह दिया तब ऋषिवर ने अपनी विनम्रता की पराकाष्ठा दिखाते हुये कहा था कि गौतम, कपिल और कणाद के अभाव में आप मुझे ऋषि कह रहे हो, उस युग में यदि मैं होता तो उनकी सभा में बैठने का सम्भवतः अधिकारी न होता।

इससे यह तो प्रमाणित होता ही है कि आपत्तिकर्त्ता वह लेखक स्वयं स्वीकार करता है कि महर्षि के जीवनकाल में ही उनके ऋषित्व को धर्म-कर्म में आस्था रखने वाले स्वीकार करते थे। बड़ों का बड़प्पन इसमें है कि वे अपने बड़प्पन की डींग नहीं मारा करते। ऋषि स्वयं को ईश्वर नहीं ईश्वर का उपासक बताते थे। गुरुडम चलाने वाले बाबे स्वयं को ईश्वर का दर्शन करवाने वाले और मोक्ष तक पहुँचाने वाले बिचोलिये मानते हैं।

प्रिय गौरव आर्य को बधाई- आर्यजनता को यह जानकारी देते हुये हमें हर्ष होता है कि महर्षि स्मृति न्यास जोधपुर के न्यासियों ने कर्मठ और उत्साही आर्ययुवक प्रिय गौरव आर्य को अब न्यासी चुन लिया है। इसके लिये गौरव जी से पहले हम न्यासियों को बधाई देते हैं, जिन्होंने एक प्रतिष्ठित आर्य-परिवार के परखे हुये सिद्धान्तनिष्ठ, पुरुषार्थी, परमार्थी, आर्यवीर गौरव को अपना न्यासी चुनकर दूरदर्शिता का परिचय दिया है। हम आशा करते हैं कि गौरव जी स्मृति न्यास को आर्य जाति के लिये धर्म-रक्षा का एक सुदृढ़ दुर्ग बनायेंगे। सारा वर्ष न्यास में गतिशीलता का परिचय मिलना चाहिये। विरोधियों के, सब विधर्मियों के द्वारा होने वाले प्रत्येक प्रहार का न्यास को उत्तर देना चाहिये। आर्यसमाज में परकीय मतों का क्या और पौराणिकों का क्या अब उत्तर देने वाले कितने बचे हैं, तभी तो पोपमण्डल का उत्साह बढ़ गया है। अपने आपको आर्यसमाजी बताने वाले, कहने वाले आर्यसमाज का चोला ओढ़कर निडरता से पत्थर-पूजा करते देखे जा सकते हैं। हमारे कथन की पुष्टि योगी आदित्यनाथ महाराज भी कर रहे हैं।

ऋषि ने कहा मेरी मूर्ति न बनाना, समाधि न बनाना, यही तो मूर्तिपूजा की नींव होती है। मेरी भस्म को खेतों में डाल देना। इतने लम्बे समय के बाद फिर कुछ लोग ऋषि की आज्ञा का हमसे उल्लंघन करवाना चाहते हैं। ऐसे लोग हमें श्मशान-पूजक पत्थर-पूजक बनाकर स्वयं को ऋषि-भक्त के रूप में प्रमाणित करना चाहते हैं। आर्यो पं. चमूपति जी ने लिखा है-

हे ! मर कर भी जीतों के काम आने वाला।
दयानन्द स्वामी तिरा बोलबाला।।

कविरत्न प्रकाश जी के ऐसे गीत भूल मत जाना।

हमारी नई पीढ़ी के लिये एक मौलिक सीख- 'वेदप्रकाश' मासिक का अक्टूबर सन् २०१८ का विशेषाङ्क प्राप्त करते ही, डाकघर में उस पर एक विहङ्गम दृष्टि डालते ही लेखक झूम उठा। हमारे गद्गद होने का कारण यह नहीं था कि लेखक की लोकप्रिय कृति 'मौलिक वेद' को विशेषाङ्क के रूप में इस बार निकाला गया है। सो तो पहले ही पता था। लेखक की अपार प्रसन्नता का कारण यह है कि माता आर्यसमाज के एक गुणी पुरुषार्थी सपूत ने इस अंक को भेंट करते हुये आर्यसमाज के भविष्य के उदीयमान विद्वान् साहित्यकारों को सैद्धान्तिक साहित्य के सृजन व लेखन के लिये एक नई विधा, नई शैली और मौलिक सीख देकर माँ आर्यसमाज तथा अपने सुयोग्य पिता, आर्यसमाज के इतिहासपुरुष, अपने पितामह श्री ला. गोविन्दराम जी का सिर ऊँचा कर दिया है।

श्री अजय ने इसमें क्या किया व क्या दिया है, जो सेवक भावविभोर होकर यह प्रतिक्रिया दे रहा है? इसे समझाने व सुस्पष्ट करने के लिये विनीत अपना एक पुराना संस्मरण, एक अविस्मरणीय घटना यहाँ दोहराना चाहता है। बात बहुत पुरानी हो गई। श्री क्षितीश जी सम्पादक 'आर्यजगत्' को मिलने मन्दिर मार्ग के आर्यसमाज पहुँचा। क्षितीश जी ने जाते ही साहित्यिक चर्चा छेड़ते हुये एक प्रश्न पूछ लिया। ''आपकी पुस्तकों, लेखों व तड़प-झड़प में शीर्षक, उपशीर्षक बहुत अनूठे व हृदयस्पर्शी होते हैं। आपने ऐसे शीर्षक, उपशीर्षक देने किससे? कहाँ से सीखे?''

मैंने छूटते ही सहज भाव से (मानो मैं ऐसे प्रश्न की बाट जोह रहा था) कहा, ''श्री भारतेन्द्रनाथ जी, महाशय कृष्ण जी, पं. इन्द्र जी आदि अपने पूर्वजों से यह कला

सीखी।'' श्री क्षितीश जी मेरे मुख से निकले तीनों-चारों नामों को सुनकर बहुत आनन्दित होकर बोले, ''आपने ठीक ही कहा, इन सबकी सम्पादकीय कला ही निराली थी।''

उनका यह कथन उनका आर्यत्व है, सौजन्य है। अपनी पुस्तकों में, ग्रन्थों में अध्याय की समाप्ति पर हम भी कभी-कभी महत्त्वपूर्ण वचनों को, वाक्यों को दिया करते हैं। अजय जी ने तो पूरी पुस्तक में इसे एक शैली बनाकर साहित्यसेवियों का बहुत उपकार किया है। आपकी सूझ पर बलिहारी!

कोई बात नहीं-उनको छुट्टी है- प्रत्येक संस्था में और प्रत्येक संगठन में लेखक, वक्ता और विद्वान् लोकतान्त्रिक सोच व अपनी सोच के अनुसार संगठन के हित में एक-दूसरे के विचार पर प्रतिक्रिया देते ही रहते हैं। आर्यसमाज के संगठन में अद्‌भुत प्रतिक्रिया देने वाले एक सज्जन को लोग फ़ौजदारी वकील की उपाधि दे रहे हैं। आप किसी भी विषय पर, किसी भी व्यक्ति पर कोई टिप्पणी करिये, यह फौजदारी वकील झट से उसका वकील बनकर बीच में कूद पड़ता है।

सत्यार्थप्रकाश के विषय में अग्निवेश महोदय ने अमृतसर में सिखों की एक सभा में जिसका विषय ही कुछ और था। सिखों को उकसाते हुये हिन्दुओं पर और सत्यार्थप्रकाश पर आपत्तिजनक निरर्थक टिप्पणी कर दी। उस सभा के कुछ श्रोता इसे सुनकर वहाँ से उठकर भी चल दिये। एक अकाली नेता को भी अग्निवेश की कुचाल समझ में आ गई।

समलैङ्गिकता की वकालत अग्निवेश ने जोर-शोर से की और भारत में एक नया युग आ गया। यह फ़ौजदारी वकील अग्निवेश के ऐसे-ऐसे कुकृत्यों पर मौन साधे बैठा है, परन्तु इन पंक्तियों के लेखक को एक बार अग्निवेश की वकालत करते हुये लिखा, उसने टंकारा से पदयात्रा आरम्भ की, है तो आर्यसमाजी!

इस वकील को हम क्या कहें? मेरठ के महासम्मेलन में उत्पात किसने मचाया था? हमें प्रणवानन्द जी ने कई बार बताया कि तब वेशपंथी लाल-लाल पगड़ियाँ जलाते फिरते थे। ओमप्रकाश वर्मा जी से भी पूछ लो। गुंजोटी में श्री ओमप्रकाश वर्मा पर घातक आक्रमण की घटना की कहानी उस समय के वहाँ के समाज के प्रधान श्री रमेश ठाकुर जी से सुन लो। कुछ वर्ष पूर्व तलवन में श्री वीरेन्द्र जी द्वारा आयोजित समारोह में रंग में भंग डालने दोनों वेश पहुँच गये। उसके पश्चात् कितने वेश तलवन पहुँचे? वकील जी कुछ तो बतायें।

हमने अपने महापुरुषों के एक-एक प्रेरक प्रसंग, ऐतिहासिक महत्त्व की घटना को उभारने की प्रेरणा देते हुये श्री स्वामी सत्यपति जी के गुरुकुल झज्जर में प्रवेश पर कुछ लिखा। मुसलमानों, ईसाइयों, विरोधियों विधर्मियों के वार-प्रहार पर चुप्पी साधने वाले, टर्र-टर्र करते हुये बोलने व लिखने लग गये। फ़ौजदारी वकील ने भी फ़ेसबुक पर हमें याद किया। हमें चतुराई से झूठा सिद्ध करना चाहा। हमें मित्रों से जानकारी मिल गई। तत्काल रोहतक से एक आर्यवीर ने अपने फेसबुक पर लिख दिया कि श्री सुखदेव जी शास्त्री ने उन्हें भी यह घटना सुनाई थी। श्री सोमदेव शास्त्री गुरुकुल गौतमनगर वालों से भी यह प्रसंग सुन लो। घर से निकलो, हिसार में श्री सत्यपाल आर्य से भी कुछ जानकारी प्राप्त कर लें। वकील जी दीनानगर जाकर वहाँ के योग शिविर से रोजड़ के महात्मा लोग शिविर आरम्भ होने से पहले ही दीनानगर से क्यों चले आये? यह बताने स्वामी सर्वानन्द जी महाराज तो अब आयेंगे नहीं। हम भी नहीं बतायेंगे। आप वहाँ जाकर जाँच करके फ़ेसबुक पर अपना निर्णय डाल देना।

फ़ौजदारी वकील ने निब घिसाकर लेख दिये कि माता भगवती विधवा देवी नहीं थी। हमने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर अपने ग्रन्थ में इस संबन्ध में प्रमाणों की झड़ी लगा दी। हमने माईजी के सहयोगी रहे दीवान बद्रीदास जी, महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम और आर्य नेताओं की प्रथम पीढ़ी के नेता मेहता जैमिनि के मुख से जो सुना था, सो लिखा था। हमसे बड़ा और जीवित प्रमाण बस एक पं. ओम्प्रकाश वर्मा बचे हैं।

'रसाला एक आर्य' उर्दू पुस्तक पर इसी श्रीमान् ने पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक को झुठलाने के लिये हम पर वार पर वार किये। हमने मूल पुस्तक के दो संस्करणों की एक-एक प्रति खोज निकाली है। इसे चुनौती दी कि

आकर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर या अन्त में कहीं तो लेखक के रूप में लाला जीवनदास जी का नाम दिखा दो। एक संस्करण में तो लाला जीवनदास जी को सम्पादक तो क्या (मुअल्लफ़) भी नहीं लिखा मिलता।

नन्हीं वेश्या को चरित्र की पावनता का प्रमाण-पत्र दिया गया, तब तो यह फ़ौजदारी वकील बोला ही नहीं। कोई बात नहीं इनकी कृपावृष्टि को हम बुरा नहीं मानते।

परोपकारी का एक उपकार- एक से अधिक बार हमें चलभाष पर यह सूचना मिलती रही कि एक उदीयमान आर्यवीर एक आर्यपुरुष के संग हमें मिलने आने वाला है। वह मिलकर धर्म-चर्चा करके कुछ प्रेरणा पाने का इच्छुक था। कुछ साहित्य भी लेने की चाह थी। वह आज-कल कहता रहा, परन्तु न आया। बहुत समय के पश्चात् उससे भेंट हो गई। उसके नगर का व उसका नाम हम अभी नहीं बतायेंगे। इसी में समाज का हित है।

वह युवक उच्च शिक्षा पा रहा है। अत्यन्त मेधावी सूझबूझ वाला स्वाध्याय-प्रेमी है। किसी प्रकार परोपकारी का पाठक बन गया। तड़प-झड़प पढ़कर दृढ़ आर्य बन गया है। तड़प-झड़प व परोपकारी में जो कुछ पढ़ा है उसे सब कण्ठाग्र है। उसका परिवार भारत के एक अति भयानक बाबे का पंथ अनुयायी है। उनको पता लग गया है कि परोपकारी पत्रिका तथा एक जिज्ञासु नाम के आर्यसमाजी को पढ़कर हमारा जवान बेटा एकेश्वरवादी, यज्ञ प्रेमी और वेदनिष्ठ बन गया है। वे उस युवक को इस विनीत से मिलने ही नहीं देते।

उस युवक के हृदय में परोपकारी पढ़-पढ़कर पं. लेखराम जी और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी घुस गये हैं। वह युवक कुछ साहित्य क्रय करके ले गया है। कुछ ठोस साहित्य हमारे मान्य जितेन्द्रकुमार जी गुप्त वकील तथा इस सेवक ने उसे भेंट किया है। उसने अपना जीवन पं. लेखराम के वैदिक मिशन को भेंट करने का दृढ़ निर्णय लिया है। निरन्तर मिशन से जुड़ा रहेगा तो अवश्य चमकेगा। हम उसे अपने आर्यवीरों से जोड़ देंगे। इन शब्दों के साथ हम डॉ. दिनेश जी, मान्या ज्योत्स्ना जी तथा परोपकारिणी सभा को अज्ञान की परतों से एक परत खोलने पर बधाई देंगे। **- वेद सदन, सूर्यनगरी, अबोहर, पंजाब**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते** हैं। अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें**। लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीवों को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१८

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत ३० वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	१२ नवम्बर, १९८८
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	०५ नवम्बर, १९८९
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	२७ नवम्बर, १९९०
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	१६ नवम्बर, १९९१
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	०१ नवम्बर, १९९२
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	२८ नवम्बर, १९९३
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	१२ नवम्बर, १९९४
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	०३ नवम्बर, १९९५
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	०१ नवम्बर, १९९६
१०. वेद और राष्ट्र।	२४ अक्टूबर, १९९७
११. वेद और विज्ञान।	०९ अक्टूबर, १९९८
१२. वेद और ज्योतिष।	१० नवम्बर, १९९९
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	०३ नवम्बर, २०००
१४. वेद और निरुक्त	१८ नवम्बर २००१
१५. वेद में इतिहास नहीं	०१ नवम्बर २००२
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	३१ अक्टूबर २००३
१७. वेद में शिल्प	१९ नवम्बर २००४
१८. वेदों में अध्यात्म	११ नवम्बर, २००५
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	२७ नवम्बर, २००६
२०. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है	१६ नवम्बर, २००७
२१. वैदिक समाज विज्ञान	०५ नवम्बर, २००८
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	२३ अक्टूबर, २००९
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	१२ नवम्बर, २०१०
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	०४ नवम्बर, २०११
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य	१६ नवम्बर, २०१२
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	८ नवम्बर, २०१३
२७. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४
२८. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	२०,२१,२२ नव., २०१५
२९. दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	४,५,६ नव., २०१६
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	२७,२८,२९ अक्टू., २०१७

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१८ के लिए निर्धारित विषय

षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

उपशीर्षक :

०१. वेदों में दर्शन तत्त्व की विवेचना
०२. वेदों में षड्दर्शनों के मूलतत्त्व की मीमांसा
०३. महर्षि दयानन्द के चिन्तन में षड्दर्शनों की वेदमूलकता
०४. षड्दर्शनों में ईश्वर-विचार और उनकी वेदमूलकता
०५. षड्दर्शनों में प्रमाण-विचार और महर्षि दयानन्द
०६. षड्दर्शनों में जगत् का सम्प्रत्यय और उसकी वेदमूलकता
०७. षड्दर्शनों में जीव सिद्धान्त या जीवात्मा का सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द
०८. षड्दर्शनों की वेदमूलकता और मुक्ति विचार के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द
०९. षड्दर्शनों की वेदमूलकता प्रत्यक्ष प्रमाण के सन्दर्भ में- एक विवेचना
१०. षड्दर्शनों में अनुमान प्रमाण की वेदमूलकता का समीक्षात्मक विशेषण
११. षड्दर्शनों में बन्धन का सिद्धान्त और वेदमूलकता
१२. वेदों के सन्दर्भ में षड्दर्शनों की प्रमुख मान्यताएँ और महर्षि दयानन्द
१३. षड्दर्शनों में मोक्ष प्राप्ति के साधन और महर्षि दयानन्द
१४. षड्दर्शनों में सत् के स्वरूप की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द
१५. षड्दर्शनों में कर्म सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द
१६. षड्दर्शनों में पदार्थ विवेचन और महर्षि दयानन्द
१७. षड्दर्शनों में ब्रह्म एवं जीव सम्बन्धों की विवेचना की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द
१८. षड्दर्शनों के समन्वय की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द
१९. षड्दर्शनों में वेद विचार और महर्षि दयानन्द
२०. षड्दर्शनों में त्रैतवाद की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द
२१. महर्षि दयानन्द के अनुसार षड्दर्शनों का समन्वय
२२. वैशेषिक दर्शन की वेदमूलकता
२३. न्याय दर्शन की वेदमूलकता
२४. सांख्य दर्शन की वेदमूलकता
२५. योग दर्शन की वेदमूलकता
२६. मीमांसा दर्शन की वेदमूलकता
२७. वेदान्त दर्शन की वेदमूलकता
२८. वेदान्त दर्शन में वर्णित ब्रह्म के स्वरूप की वेदमन्त्रों से पुष्टि।

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

०१. षड्दर्शन समन्वय- श्री प्रशान्त आचार्य
०२. आचार्य उदयवीर शास्त्री का षड्दर्शन भाष्य एवं विवेचना ग्रन्थ
०३. योग दर्शन भाष्य-पं. राजवीर शास्त्री
०४. स्वामी ब्रह्ममुनि के दर्शन भाष्य
०५. स्वामी दर्शनानन्द जी के दर्शन भाष्य
०६. भारतीय दर्शन (दो भाग)- डॉ. राधाकृष्णन्
०७. महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त ग्रन्थ
०८. दर्शन तत्त्व विवेक- आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
०९. षड्दर्शन समन्वय-पं. विद्यानन्द शर्मा
१०. भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण- एम. हिरियन्ना
११. भारतीय दर्शन-एस.एन. दासगुप्त
१२. भारतीय दर्शन-दन्त एवं चटर्जी
१३. भारतीय दर्शन- एन.के. देवराज
१४. भारतीय दर्शन-जी.डी. शर्मा
१५. भारतीय दर्शन-उमेश मिश्र
१६. भारतीय दर्शन-बलदेव उपाध्याय
१७. सिक्स सिस्टम ऑफ इण्डियन फिलॉस्फी- एफ. मैक्समूलर
१८. रिचर्ड गार्वे- सांख्य फिलॉस्फी

संयोजक-डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी

बौद्धदर्शन का आरम्भ

आचार्य उदयवीर शास्त्री

भारतीय दर्शन दो भागों में विभक्त है-वैदिक दर्शन, अवैदिक दर्शन। पहले भाग में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व-मीमांसा और उत्तर-मीमांसा अर्थात् वेदान्त का समावेश है। दूसरे में चार्वाक्, बौद्ध और जैन दर्शन का। पहले को 'वैदिक' नाम कदाचित् इसलिये दिया जाता है कि वहाँ अन्य किन्हीं भी सिद्धान्तों को चाहे किसी रूप में माना गया हो, पर वेदों के अस्तित्व और उनके प्रामाण्य को निर्बाध रूप में स्वीकार किया गया है, जिसका दूसरे भाग में सर्वथा अभाव है। यह भी कहा जाता है कि जगत्कर्त्ता ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने से दर्शन के पहले विभाग का नाम वैदिक तथा न करने से दूसरे का नाम अवैदिक है, पर वैदिक दर्शनों में सांख्य और पूर्व मीमांसा के सम्बन्ध में यह प्रसिद्धि है कि उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया।

यद्यपि यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सांख्य के प्रवर्त्तक कपिल ने ईश्वर के अस्तित्व का निषेध नहीं किया। उसने जगत् के उपादानभूत ईश्वर को नहीं माना। वह विश्व के अधिष्ठाता अथवा कर्त्ता ईश्वर को स्वीकार करता है। पर सांख्य की परम्परा के एक आचार्य वार्षगण्य ने जगत् की प्रक्रिया से ईश्वर के अस्तित्व का सर्वथा बहिष्कार कर दिया है, फिर भी उसका दर्शन, वैदिक दर्शन समझा जाता है। पूर्वमीमांसा के प्रवर्त्तक जैमिनि का भी तात्पर्य ईश्वर के अभाव को बतलाने में नहीं है। साधारणतया ईश्वर का अस्तित्व जगत् के कर्त्ता-रूप में स्वीकार किया जाता है। जैमिनि ने जगत् के सर्ग-प्रलय को स्वीकार नहीं किया। वस्तुत: वह धर्म के स्वरूप का प्रतिपादन करने के लिये प्रवृत्त हुआ है, जगत् के सृष्टि-प्रलय का निरूपण करना उसने अपने शास्त्र का लक्ष्य नहीं बनाया। यह संभव है कि इसी आधार पर अनन्तर काल में समझ लिया गया हो कि जब जैमिनि जगत् के सर्ग-प्रलय को मानता नहीं, तो उसके लिये ईश्वर को मानने की आवश्यकता ही क्या है?

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देने की बात है कि अवैदिक दर्शनों के प्रवर्तक आचार्यों ने भी किसी न किसी रूप में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार ही किया है। चार व्यक्तियों के घर में भी किसी एक-व्यक्ति को मुख्य माना जाता है। कोई संस्था, कोई संघ, कोई शासन, कोई समाज छोटा या बड़ा- ऐसा नहीं, जहाँ किसी एक को 'बड़ा' ईश्वर-स्थानीय माने बिना काम चलाया जा सकता हो, चार्वाक दर्शन में 'राजा' को ईश्वर का रूप मान लिया गया है। जैन दर्शन में अनेक तीर्थंकरों अथवा भगवान् 'अर्हन' को और बौद्ध दर्शन में वही स्थान भगवान् बुद्ध को प्राप्त हुआ। ईश्वर एक गूढ़ शक्ति है, '**एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा**' सर्वथा अदृश्य, उसके सम्बन्ध में अनेक कल्पना की जा सकती हैं और उदयनाचार्य के शब्दों में यह स्पष्ट है कि किसी न किसी रूप में ईश्वर का अस्तित्व सबने स्वीकार किया है। फलत: दर्शनों का उक्त विभाग वेद के प्रामाण्य को मानने न मानने पर ही आधारित समझना चाहिये।

अवैदिक दर्शनों में जहाँ तक बौद्ध-दर्शन का प्रश्न है, इसका आरम्भकाल अन्य अनेक सिद्धान्तों के समान अन्धकार से आवृत है। विद्वानों ने प्रयत्न करके उसे बहुत कुछ प्रकाश में लाने का श्रेय प्राप्त किया है। भगवान् बुद्ध के प्रादुर्भाव से पूर्व अनेक शताब्दियों में शनै:-शनै: विकृत होकर वैदिक मर्यादाओं तथा अन्य कर्म-कलापों में असह्य भ्रष्टाचार फैल गया। उसी रूप में उनका सम्बन्ध वेदों के साथ जोड़ने का दृढ़ता से यत्न किया गया, तब उसकी घोर प्रतिक्रियारूप में बौद्ध-भावनाओं का उदय हुआ। वेद और वेद-प्रतिपादित तथा आर्यदर्शन के मूल आधार-चेतन (परमात्मा) के अस्तित्व को गंभीर उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया। वैदिक कर्मकाण्ड जो केवल आडम्बर रह गया था, हिंसा का क्षेत्र बन चुका था। पवित्रागारों में धर्माचार के स्थान पर अनाचार का बोल-बाला था। प्रमाद, आलस्य तथा स्वार्थ की भावनाओं से समाज का श्रेष्ठ अंग पंगु बन

चुका था। यज्ञों में बलि का प्राबल्य था। धर्म के नाम पर प्रजा अत्याचारों की चक्की में पीसी जा रही थी। नाम वेद का और काम अपने मन के भेद का, अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग। समाज का उद्वेग पराकाष्ठा को पहुँच चुका था।

ऐसे समय बुद्ध के करुणापूर्ण हृदय में तीव्र प्रतिक्रिया का उन्मेष हुआ। उसने अपने-आप को तैयार किया, अपनी शक्ति को तोला और धर्म के मूल आधार अहिंसा के आदर्श की घोषणा की तथा समाज को एक सूत्र में बाँधने का बीड़ा उठाया। '**धम्मं सरणं गच्छामि**' '**संघ सरणं गच्छामि**' के मूल मन्त्र का जनता के हृदय में उद्बोधन करने के लिए अपना जीवन लगा दिया। समाज ने कठोर मिथ्याडम्बर परिपूर्ण, धर्म के नाम पर फैले भ्रष्टाचार को अपने हृदय-क्षेत्रों से कूड़े-करकट के समान उखाड़ फेंका। नवीन रूप में सच्चे प्राचीन धर्म-बीज का आशान्वित होकर स्वागत किया और तब धर्मभीरु भारतीय जनता के विशाल उर्वर हृदय-क्षेत्र में आरोपित होकर वह लहलहाने लगा। इसके पुष्प और फलों की सुगन्ध समुद्र पार दूर-दूर तक पहुँची।

बुद्ध के प्रवचन और उपदेश चाहे जैसे रहे हों, पर उसने सत्यान्वेषण में अपना पूरा बल लगाया और प्रत्येक विचार को निष्पक्ष होकर ग्रहण किया। वैदिक कर्मकलाप को बुद्ध ने गहराई से जानना चाहा। ज्ञात हुआ कि वह हिंसा, अनाचार और स्वार्थपूर्ण लोलुपता का आगार बना हुआ है। उसने स्पष्ट कहा, मैं ऐसे यज्ञ व कर्मकलाप को स्वीकार नहीं कर सकता। तब कहा गया कि क्यों? यह तो सब वेद में प्रतिपादित है। बुद्ध स्वयं वेद न पढ़े थे, न उन्हें सच्चा वेदाभ्यासी विद्वान् मिल सका। उन्होंने कहा, मैं ऐसे वेद को भी नहीं मानता। तब अन्तिम तुरप फेंक दी गई। उनसे कहा गया, यह कैसे? तुम वेद को क्यों नहीं मानते, वह तो ईश्वर का ज्ञान है। बुद्ध ने सच्चे हृदय से कहा, यदि ऐसे ही वेद ईश्वर के ज्ञान हैं, जैसा तुम बताते हो, तो मैं ऐसे ईश्वर को भी मानने के लिये तैयार नहीं हूँ। बात समाप्त थी, बाँध टूट चुका था। विचार की अनन्त जल-राशि को अपनी शीतलता चहुँ ओर क्षितिज पर्यन्त पहुंचाने के लिये अबाध मार्ग था। उन्हें नास्तिक का चोला पहना दिया गया था। पर बुद्ध ने कभी अपने-आप को संयम से बाहर नहीं होने दिया। उन्होंने सदा सरल सुबोध संयत सदाचार का सदुपदेश दिया। उनके प्रवचन आदरणीय हैं। कदाचित् इन्हीं अर्थों में उन्हें अवैदिक अथवा नास्तिक कहा जा सके, तो कहा जाय।

वर्तमान काल में कार्ल मार्क्स ने यूरोप की प्रजा को सामन्तशाही के प्रपीड़न से सुरक्षा के लिए नये ढंग के सामाजिक संघटन की उद्घोषणा की। प्रारम्भ में समाज-सुधार की दृष्टि से समाज को आर्थिक शोषण से बचाने के लिये यह एक प्रचार मात्र था। उस रूपरेखा के अनुसार समाज की कुछ रचना हो जाने पर उन सिद्धान्तों को दार्शनिक रूप देने की आवश्यकता प्रतीत हुई। कोई भी वाद जब दार्शनिक प्रक्रिया की सीमा में आ जाता है, तो उसे स्थायित्व प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार बुद्ध के निर्वाण के अनन्तर उनके विचारों को दार्शनिक रूप देने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। उसका ही परिणाम यह विशाल एवं सुदृढ़ बौद्ध-दर्शन है, जिसका निर्माण अब से लगभग दो सहस्र वर्ष पूर्व हो चुका था।

बौद्ध दर्शन की भित्ति अनीश्वरवाद पर आधारित है। भगवान् बुद्ध ने ईश्वर के सम्बन्ध में अपने जो भाव प्रकट किये, जिनका संकेत ऊपर किया गया है, यह संभव है कि उनकी वास्तविकता और कुछ रही हो तथा बुद्ध का तात्पर्य अनीश्वरवाद में न हो, पर उनके अनुयायी तात्कालिक विद्वानों ने ऐसा ही समझा। प्रतिक्रिया की स्थिति ऐसी ही हुआ करती है। फलतः बौद्ध विद्वानों ने अपने दर्शन की स्थापना के लिये यह अनुभव किया कि मूल रूप से जगत्-प्रक्रिया में ईश्वर के अस्तित्व की अनावश्यकता का कोई प्राचीन आधार होना चाहिए। यद्यपि बुद्ध के प्रादुर्भाव से बहुत पहले अति प्राचीन काल में एक व्यक्ति ने इसी तरह के धर्म के नाम पर सामाजिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रबल उद्घोषणा की थी। उस वीर मेधावी पुरुष का नाम बृहस्पति था। उसके विचारों के प्रचारक चार्वाक् के नाम पर आज भी वह चमत्कारपूर्ण मत पंगु-प्रतीक के रूप में विद्यमान है। पर बौद्ध दर्शन के उदयकाल से पूर्व ही उसका अभ्युदय अप्रतिष्ठा की आग में भस्म हो चुका था। बौद्ध विचारों को दर्शन का रूप देने वाले विद्वानों ने

अपने लिए उस आधार को उपयुक्त न समझा।

विचार और प्रतिष्ठा की दृष्टि से सांख्यदर्शन का स्थान विद्वत्समाज में सदा मूर्धन्य रहा है। उस समय तो वह अपने पूर्ण प्रकाश में विद्यमान था। बौद्ध विद्वानों का ध्यान उस ओर जाना स्वाभाविक था। भावुकता से अभिभूत, प्राचीनता में पक्षपात रखने वाले धर्म-प्राण भारतीय समाज के सम्मुख यदि आप किसी वाद के लिये प्राचीन आधार उपस्थित कर सकते हैं, तो आप विजयी हैं। बौद्ध विद्वानों ने विचारों की दृष्टि से सांख्य के अन्तर्गत आचार्य वार्षगण्य के सिद्धान्तों को अपने बहुत समीप देखा। उन्होंने इसी को अपने दर्शन का प्रथम आधार बनाकर, जगत्सर्ग की प्रक्रिया में ईश्वर के अस्तित्व को अनावश्यक बताकर, उसे अलग निकाल फेंका तथा वार्षगण्य के एतत्सम्बन्धी सिद्धान्तों को सांख्य के नाम पर ही प्रबल प्रयत्न के साथ प्रचारित किया। शताब्दियों के इस प्रचार का यह परिणाम हुआ कि सांख्य पर निरीश्वरवादिता दृढ़ रूप में आरोपित कर दी गई। सांख्य की प्रतिष्ठा के कारण उसकी इस मान्यता से बौद्धदर्शन के विचारों को बल मिला और भारतीय जनता बौद्ध दार्शनिक विचारों को स्वीकार करने में अपनी प्राथमिक प्रतिकूलता को खो बैठी। वह सांख्य-विचारों से पूर्ण प्रभावित थी और उसके नाम पर किए गए प्रचार से जनता के मस्तिष्क को इस दिशा में अनुकूल बनाने का पूरा प्रयत्न हुआ था।

सांख्य की एक शाखा के द्वारा प्रतिष्ठापित निरीश्वरवाद को जब सांख्य का सिद्धान्त मान लिया गया, उसी रूप में बौद्ध दार्शनिकों ने इसे प्रश्रय देकर अपने दर्शन की नींव डाली। दृश्यादृश्य जगत् का ऊहापोहपूर्वक विवेचन करना ही दर्शन है। बौद्धदर्शन के सामने भी यह समस्या आई कि जगत्-प्रक्रिया का निर्वाह किस रूप में समञ्जस हो सकता है। यह एक अतिरोहितवाद है कि जगत् प्रकृति का परिणाम है। 'प्रकृति' पद को पारिभाषिक न समझकर इसका अर्थ केवल 'मूल उपादान' मान लेना चाहिए। अभिप्राय यह है कि कोई भी मूल तत्त्व परिणत होकर इस स्थिति में प्रतीत होते हैं। किसी वस्तु का रूपान्तरित होना ही परिणाम है। इस परिणामवाद को ही बौद्धदर्शन में क्षणिकवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसे बौद्ध दर्शन का सकल कलेवर कहा जा सकता है। क्षणिकवाद ही बौद्ध दर्शन का वास्तविक स्वरूप है। परिणाम की स्थिति को समझने का यत्न करने पर हम क्षणिकवाद में प्रवेश कर जाते हैं। देखना यह है कि ये परिणाम कभी-कभी होते हैं या सदा होते रहते हैं? उदाहरण के लिए कोई एक वस्तु ले लीजिये- दूध। अभी हम जिसे दूध कहते हैं, कालान्तर में वह अपनी उसी स्थिति में नहीं रहता, दही हो जाता है, या फटकर अन्यथा विकृत। क्या जब हमने इसे 'दही' देखा, तभी यह ऐसा बन गया है या जब से इसे दूध देखा था, तभी से धीरे-धीरे इसमें अनेक विकार होते हुए यह दही की स्थिति में पहुँचा है? बौद्ध दर्शन अन्तिम बात को स्वीकार करता है। प्रत्येक वस्तु हर समय परिवर्त्तित होती रहती है, पर सब समय प्रत्येक परिवर्त्तन या परिणाम हमें लक्षित नहीं हो पाता। एक बीज अंकुरित होकर पौधा पेड़ बन जाता है, फिर क्षीण होता हुआ सूख जाता है और मिट्टी में मिल जाता है। इसके परिणाम अधिक स्पष्ट लक्षित होते रहते हैं, एक मकान बनाकर तैयार किया गया, हम समझते हैं, कदाचित् पचासों वर्षों तक वह एक ही रूप में खड़ा रहा है, उसके बाद वह एक दिन गिर गया और भूमिसात् हो गया। क्या सचमुच उस दिन तक और कोई परिवर्त्तन उसमें नहीं हुआ था? यदि गम्भीरता से विचारा जाय, तो स्पष्ट होगा कि आद्यकाल से प्रतिक्षण होने वाले परिवर्त्तनों ने ही एक दिन उसे इस जर्जर और शिथिल अवस्था में पहुंचा दिया है कि वह आज भूमिसात् हो गया। हमने चाहे प्रतिक्षण होने वाले परिणाम को लक्षित नहीं किया, पर अपनी प्रवाहित होती हुई उस स्थिति से वह बच नहीं सकता।

प्रत्येक वस्तु की यही वास्तविक स्थिति है, एक नदी के किनारे बैठ जाइये। जलधारा निरन्तर प्रवाहित रहती है, जो जलधारा एक बार आपके सामने से निकल गई, उसका फिर कभी आपके सामने आना असम्भव है। पर हम यही जानते व समझते हैं, वही गंगा लाखों वर्षों से अपने रूप में चल रही है। वस्तुतः वह रूप ही निरन्तर प्रवाहशील है। समस्त संसार इसी प्रकार निरन्तर बह रहा है, यही अनवरत होने वाला प्रत्येक वस्तु का परिणाम-प्रवाह क्षणिकवाद का स्वरूप है।

वर्त्तमान बौद्धदर्शन की प्रसिद्ध चार शाखा हैं- माध्यमिक, योगाचार, वैभाषिक, सौत्रान्तिक। सर्वप्रथम भगवान् बुद्ध ने उत्तम अधिकारी शिष्यों को शून्यवाद का उपदेश किया। जितने गन्ध आदि बाह्य अर्थ तथा रूपादि ज्ञान आनन्तर अर्थ हैं, उन सबमें अनास्था उत्पन्न करने के लिए-सब कुछ शून्य है, अर्थात् सब का पर्यवसान **शून्य में** ही है-इस सिद्धान्त का उपपादन किया! दूसरे कतिपय शिष्यों ने भगवान् से निवेदन किया, यदि सब शून्य है, तो जगत् अन्धकारमय होना चाहिए, पर इसके विपरीत बराबर इसका ज्ञान होता देखा जाता है। बुद्ध ने इस प्रकार विज्ञान (विविध वस्तु-ज्ञान) में उनका आग्रह देख-विज्ञान ही एक तत्त्व है-ऐसा उपदेश उनको दिया। ये विज्ञानवादी बौद्ध कहे जाते हैं। इन्हीं का नाम 'योगाचार' है। बाह्य अर्थ में आस्था रखने वाले अन्य शिष्यों ने जिज्ञासा की, भगवन्! बिना बाह्य अर्थ के ज्ञान होना संभव नहीं, इसलिये बाह्य अर्थ को अवश्य स्वीकार करना चाहिये। भगवान् बुद्ध 'तथास्तु' कहकर चुप हो गए। इन शिष्यों ने बाह्यार्थ के अस्तित्व को वास्तविक माना है। इनको बाह्यार्थवादी कहा जाता है। इनमें से कतिपय शिष्यों ने कहा कि शून्य, विज्ञान और बाह्यार्थ इन सब का एकमात्र अस्तित्व कथन करना परस्पर-विरुद्ध भाषा है, उनके ऐसा कहने पर भगवान् ने उनका नाम वैभाषिक रख दिया। कुछ शिष्यों ने प्रश्न किया, महाराज! इस सूत्र का-सिलसिले का-अन्त कहाँ होगा? इसी आधार पर भगवान् ने उन का नाम सौत्रान्तिक रहने दिया। ये दोनों बाह्यार्थवादी हैं। इनमें से पहला बाह्य अर्थ को केवल अनुमेय मानता है, जबकि दूसरा बाह्य अर्थ को प्रत्यक्ष भी कहता है। बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो ही प्रमाण स्वीकार किये गए हैं। इस दर्शन का प्रारम्भ जिस रूप में हुआ, उसी का दिग्दर्शन अति संक्षेप से किया गया है।

उन्नति का कारण सत्योपदेश

जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

(स. प्र. ३)

ऋषि मेला २०१८ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १६, १७, १८ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१८ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोट:-** किसी प्रकार का अव.दक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' आर्यों का ब्रह्मास्त्र है। ऐसा ब्रह्मास्त्र, जिसने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अन्धश्रद्धा, अविवेक और पाखण्ड मानव समाज में सहज ही पनपने वाली समस्या है, इसलिये प्रत्येक काल, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक परिस्थिति में इन समस्याओं के उन्मूलन की आवश्यकता है-अत: 'सत्यार्थ प्रकाश' की आवश्यकता भी सदैव ही अनिवार्य रहेगी, परन्तु यह विचार जन-जन तक पहुँचे, तो ही लाभकारी होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए परोपकारिणी सभा ने ५ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष 'सत्यार्थप्रकाश' के साथ 'महर्षि का जीवन-चरित्र' एवं 'आर्याभिविनय' पुस्तक का नि:शुल्क वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है। इस कार्य के परिणाम भी बहुत सुखद रूप में सामने आये हैं। पुस्तक में कई व्यक्ति आकर कहते हैं कि हमारे पास यह पुस्तक है, हम पिछले वर्ष ले गये थे।

प्रत्येक आर्यमात्र की यह इच्छा होगी कि वह भी इस ग्रन्थ को वितरित कर पुण्य का भागी बने। इसके लिये सभा प्रत्येक आर्य को इस महायज्ञ में सम्मिलित करना चाहती है। प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे तो यज्ञ और अधिक भव्य एवं विस्तृत हो जाता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के नि:शुल्क वितरण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिये आप अपने सामर्थ्यानुसार सहयोग दे सकते हैं। परोपकारिणी सभा की ओर से प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश बड़े अक्षरों में, बढ़िया कागज पर, सजिल्द छापी जाती है, जिससे नये व्यक्ति के लिये भी पुस्तक संग्रहणीय बन जाती है। इस पुस्तक की छपाई में एक प्रति का खर्च लगभग १०० रु. आता है। **यदि कोई व्यक्ति अपनी सात्त्विक भावना से केवल २० पुस्तकें (इससे अधिक कितनी भी) ही वितरित करवाना चाहता है, तो सभा उतनी प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित करेगी। इसी प्रकार ३०, ५०, १०० आदि।**

१०० रु. प्रति के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं। आहुतियाँ जितनी अधिक होंगी, यज्ञ का फल भी उतना ही अधिक होगा।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं। यह यज्ञ आपका है, प्रत्येक आर्य का है। अत: प्रत्येक आर्य इसमें अपनी आहुति अवश्य दे।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	२१००/- रु.
	३० प्रतियाँ	३१००/- रु.
	५० प्रतियाँ	५१००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	११०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी और दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। दान अक्टूबर माह के अन्त तक भिजवा देवें, ताकि प्रतियों की संख्या निर्धारित करके उन पर दानदाताओं का नाम अंकित किया जा सके। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

विज्ञान की ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाएँ

रामनिवास 'गुणग्राहक'

यह एक सर्वविदित तथ्य है, कि सदियों पहले जब विज्ञान ने एक नवजात बालक की तरह आँखें खोलकर संसार को अपनी दृष्टि से देखकर, अपनी भाषा में परिभाषित करने का प्रयास किया, तो धर्म के नाम पर फैले हुए मत-पन्थों के परम्परागत ठेकेदारों ने विज्ञान का मुँह बन्द करने के लिए उस पर खूब अत्याचार किये। जब किसी वर्ग विशेष द्वारा किसी पुस्तक विशेष को धर्मग्रन्थ का गौरव दिलाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान बताकर सामान्य जन के मनोमस्तिष्क में बिठा दिया जाता है, तो परम्परावादी लोग तर्क और विवेक की भाषा सुनना और समझना बन्द कर देते हैं। अन्धविश्वास इतना बढ़ जाता है कि मतवादिता की चपेट में आने वाला शिक्षित व बुद्धिजीवी मनुष्य भी तर्क-प्रमाण से मुँह मोड़कर सृष्टि को वैज्ञानिक सिद्धान्तों की अपेक्षा उन तथाकथित मत-ग्रन्थों के अनुसार निर्मित व सञ्चालित होना ही मानता है। **चाहे विज्ञान अपनी बात को तर्क और प्रमाणों के साथ हर कसौटी पर खरी सिद्ध कर दे, दूसरी ओर मत-पन्थ वाले चाहे अपनी किसी बात की सत्यता के पक्ष में दो शब्द भी न बोल सकें, फिर भी मतवाले लोग मत वाली बातों के लिये मतवाले हुए फिरते हैं।** इस मतवादिता ने मानवता का बड़ा घोर अहित किया है, आज भी कर रही है और भविष्य में जब तक रहेगी अहित और अनर्थ के अतिरिक्त इससे मानव जाति को कुछ नहीं मिलना।

वैदिक ऋषियों की घोषणा है-'**सत्यमेव जयते नानृतम्**' अर्थात् सत्य की विजय होती है, झूठ की नहीं। उन तत्त्ववेत्ता ऋषियों ने तो सत्य को ही धर्म और झूठ को ही पाप व अधर्म कहा है- '**न सत्यात् परो धर्मः नाऽनृतात् पातकम् परम्**'। चूँकि सत्य विज्ञान के पास था और तथाकथित तत्कालीन धर्म विज्ञान के विरुद्ध था और सत्य का विरोधी होने के कारण धर्म कही जाने वाली अन्धी मतवादिता अधर्म या पाप की कोटि में आती थी। असत्य पर टिकी हुई मतवादिता विज्ञान के आगे बौनी होती चली गई। **अगर झूठ-जीवी मतवादिता को अविद्याग्रस्त जन समुदाय का आश्रय नहीं मिलता तो सारे मत पन्थ व सम्प्रदाय आज इतिहास की वस्तु बनकर रह जाते।** जो भी हो, आज सच यह है कि विज्ञान मानव मात्र के लिए जीवन की आवश्यकता बन कर अपनी महत्ता व उपयोगिता सिद्ध कर चुका है। दूसरी ओर ये तथाकथित धर्म कुछ कट्टरवादियों के अन्धकारग्रस्त मनो मस्तिष्क के एक कोने में पड़ा हुआ विश्व-मानव के लिए आतंक व अनाचार का पर्याय बनकर रह गया है।

जब इस तथाकथित धर्मरूपी अधर्म ने विज्ञान के साथ क्रूरता का सीमातीत व्यवहार किया तो विज्ञान को भी जीवित रहने के लिए प्रत्याक्रमण की नीति अपनानी पड़ी। विज्ञान ने देखा कि इस तथाकथित धर्म का मूल एक तथाकथित ईश्वर है। विज्ञान ने ईश्वर के अस्तित्त्व को ही अस्वीकार कर दिया- घोषणा हुई कि संसार में ईश्वर नाम की कोई सत्ता कभी नहीं रही और अगर कोई ईश्वर था भी, तो अब मर गया। धर्म वालों से विज्ञान ने ईश्वर के बारे में प्रश्न किये, लेकिन वहाँ प्रश्नों के उत्तर देने या प्रश्न पूछने तक को अपराध माना जाता था। धर्म की हर बात जानने के लिए न होकर, केवल मानने के लिए थी। उन तथाकथित धर्माचार्यों का कथन होता था- जानो मत, केवल मानो। दु:खद बात यह है कि चाहे सीमित स्तर पर ही सही, लेकिन 'जानो मत-केवल मानो' का आदेश आज भी चल रहा है। कोई उनसे नहीं पूछता कि उस ईश्वर ने हमें यह बुद्धि क्यों दी है? धर्म में ऐसा क्या है जो बुद्धि व विवेक का विषय नहीं हो सकता? आखिर बिना कुछ भी जाने-समझे हम अपना तन, मन, धन और समय अन्धकार में क्यों झोंक दें?

धर्म जब विज्ञान के ईश्वर विषयक प्रश्नों के उत्तर देने को तैयार न हुआ तो विज्ञान अन्धविश्वासों के सहारे तथाकथित ईश्वर को क्यों स्वीकार कर लेता? उसने घोषणा कर दी कि ईश्वर मर गया, परिणामतः कुछ विज्ञानवादियों ने अलग से ही एक दल बनाकर संसार में नास्तिकता का झंडा उठा लिया। चूंकि विज्ञान तो निरन्तर चलने वाली

एक विवेकशील प्रक्रिया है, वह किसी भी सन्दिग्ध निर्णय को लेकर हठ करने लगे तो वह मर जाए। विज्ञान की सत्य-खोजने वाली दृष्टि जब तक किसी तथ्य के अन्तिम छोर तक नहीं पहुँच जाती, जब तक वस्तु व विद्या को उसके सही स्वरूप में जानकर उससे यथावत लाभ नहीं ले लेती, तब तक उसका पीछा नहीं छोड़ती। विज्ञान जब अनेक क्षेत्रों व अनेक स्तरों पर अनुसन्धान करता हुआ संसार के बारे में समग्र दृष्टिकोण बनाने लगा, तो उसे लगा कि इस विश्व ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई एक शक्ति अवश्य है, जो इसको उत्पन्न करती है, इसे सञ्चालित करती है तथा इस संसार को बनाने व चलाने के पीछे उसका कोई उद्देश्य भी है। सृष्टि के बनाने और चलाने सम्बन्धी वैज्ञानिक दृष्टिकोण की एक झलक देखिए।

कनाडा की रॉयल सोसायटी के स्वर्ण पदक विजेता, वर्ण विज्ञान, तरल वायु उत्पादन, फिजियोलॉजिकल ऑप्टिक्स और ग्रैन्ड्युलर म्यूटेशन के विशेषज्ञ डॉ. फ्रेंक एलन अपने लेख 'संसार का उद्भव : अकस्मात् वा प्रयोजन' में लिखते हैं- ''यह सूरज और तारे, असंख्य जीवधारियों को अपनी गोद में लपेटे यह पृथ्वी इस बात के पक्के प्रमाण हैं कि सृष्टि का उद्भव किसी न किसी काल में, निश्चित अवधि में घटित हुआ है। इसलिए इस विश्व का कोई रचयिता होना ही चाहिए। एक महान् प्रथम कारण, एक शाश्वत, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सृष्टा अवश्य होना चाहिए।'' फ्रेंक लिखते हैं- ''जीवन धारण करने के योग्य बनने के लिए पृथ्वी ने जितने रूप बदले हैं, वे इतने अधिक हैं कि उन्हें आकस्मिक नहीं कहा जा सकता।'' इस ब्रह्माण्ड की रचना व व्यवस्था कितनी सटीक व सन्तुलित है- यह बताने के लिए फ्रेंक अपने वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर कई प्रक्रियाओं का सहारा लेते हैं। वे लिखते हैं- ''यदि पृथ्वी का व्यास चन्द्रमा जितना (वर्तमान का १/४) होता तो इसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति ६ गुणा कम होती न वायुमण्डल को सम्भाल सकती और न पानी को। तापमान भी इतना सीमातीत होता कि जीवन धारण करना कठिन हो जाता।'' फ्रेंक लिखते हैं- ''यदि व्यास दो गुणा होता तो धरातल चार गुणा होता, गुरुत्वाकर्षण शक्ति दो गुणी होती, परिणामत: वायुमण्डल की ऊँचाई घातक रूप से घट जाती।'' वायुमण्डल की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए फ्रेंक लिखते हैं- ''जीवन धारण करने में सहायक गैसों का वायुमण्डल काफी ऊँचा (लगभग ५०० मील) और इतना घना है कि तीस मील प्रति सैकिण्ड की गति से प्रतिदिन गिरने वाली दो करोड़ उल्काओं के घातक प्रभाव से पृथ्वी को बचा लेता है।''

इसी प्रकार सूर्य से पृथ्वी की दूरी को लेकर विचार करते हुए फ्रेंक लिखते हैं- ''यदि दूरी दोगुनी होती तो गर्मी चौथाई रह जाती, अयन में घूमने का वेग आधा रह जाता, सर्दियों की लम्बाई दो गुनी होकर सब प्राणी ठण्ड में जम जाते। यदि दूरी आधी कर दी जाती तो गर्मी चार गुणी, अयन का वेग दो गुणा और ऋतुओं की अवधि आधी रह जाती।'' निष्कर्षत: वे लिखते हैं- ''वर्तमान में पृथ्वी का जो आकार है, सूर्य से दूरी व अयन में घूमने का वेग है, उसी के कारण पृथ्वी पर जीवधारियों का रहना सम्भव है।'' फ्रेंक का मानना है कि पृथ्वी का आकार-प्रकार, सौरमण्डल की व्यवस्था एवं ब्रह्माण्ड का सन्तुलित संचालन- यह सब कुछ अकस्मात् नहीं कहा जा सकता, इसके बनाने व चलाने वाली कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जो अनन्त ज्ञान, बल और सामर्थ्य से युक्त है।

माइक्रो कैमिस्ट्री, इलैक्ट्रौलाइटिक फेनोमिना और एक्सरे डिफैक्शन के विशेषज्ञ डॉ. थॉमस डेविस पार्क्स - **'सादा पानी ही कहानी कह देगा'** में लिखते हैं- ''प्रकृति में नियमबद्धता सर्वोच्च बुद्धिमान (सर्वज्ञ) के कारण और उसमें रचना-कौशल किसी सर्वोच्च कुशल रचयिता (सर्वकर्त्ता) के कारण है। उस रचयिता (सर्वसृष्टा) में मुझे बुद्धिपूर्वक नियोजन दिखता है।'' डॉ. थॉमस एक बड़ी सुन्दर बात लिखते हैं- ''**उस दिव्य बुद्धिमान सत्ता (परमात्मा) को भलाई और सुख की भी उतनी ही चिन्ता है, जितनी अटल नियमों की। इस बात के कहीं अपवाद दिखते हैं, तो वे आपकी बुद्धिमत्ता के नियमों को ही चुनौती हो सकते हैं**''। डॉ. थॉमस का कथन डॉ. फ्रेंक के साथ कितनी समानता रखता है- दोनों यह मानते हैं कि संसार का निर्माण और संचालन जहाँ हमें इसके निर्माता व संचालक का ज्ञान कराता है, वहीं इससे यह भी सिद्ध होता है कि उसे संसार के प्राणियों की भलाई व सुख

की भी चिन्ता है। अगर ये महानुभाव वेद या वैदिक साहित्य पढ़े होते तो वैज्ञानिक जगत् को बता सकते कि परमात्मा ने यह संसार बनाया ही हम प्राणियों के कल्याण के लिए है।

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं कि धर्मवालों से प्रताड़ित होकर विज्ञान ने धर्म के मूल परमात्मा को ही मृत घोषित कर दिया। हमारे तत्त्ववेत्ता ऋषियों की मान्यता है- **''तर्क प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धिर्नतु संकल्पेन''**। अर्थात् वस्तु की सिद्धि तर्क और प्रमाणों से होती है, कह देने मात्र से नहीं। ऐसा नहीं कि आक्रोश व अज्ञानता के वशीभूत होकर विज्ञान ने कह दिया कि ईश्वर मर गया तो सच में ईश्वर मर ही गया हो। जब तथाकथित धर्माचारियों के कहने से ईश्वर चौथे या सातवें आसमान में सिमट कर नहीं बैठ सकता, क्षीर सागर, कैलाश पर्वत, काशी, काबे या मथुरा-मदीने में नहीं रह सकता, मन्दिर-मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे में बन्धक बनकर नहीं रह सकता तो विज्ञान वालों के मृत घोषित करने से क्यों और कैसे मर जाएगा? मैं प्रायः प्रवचन व लेखन के माध्यम से आर्य बन्धुओं से यह निवेदन करता रहता हूँ कि **सत्य कभी भी हमारे कहने या मानने के अनुसार अपना स्वरूप नहीं बदलता- हमें ही सत्य के अनुसार अपनी मति व गति में बदलाव लाना पड़ता है।** चूँकि विज्ञान सदैव विवेकोन्मुख रहा है, इसलिए उसने आवश्यकता पड़ने पर मृत ईश्वर को अमृत मानने में कोई संकोच नहीं किया। यह अलग बात है कि तब तक समाज में कुछ ऐसे अधकचरे विज्ञानवादियों का एक वर्ग तैयार हो चुका था, जो विज्ञान के क्षेत्र में कथित धर्माचार्यों वाली जड़ बुद्धि को गले में बाँधे हुए आज भी संसार के रचयिता परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता। नास्तिकों का यह बुद्धिजीवी कहलाने वाला टोला विज्ञान के उन पुराने पड़ चुके तथ्यों को लेकर सत्य का गला घोंटना चाहता है। उसे नहीं पता कि विज्ञान आज कितना आगे बढ़ चुका है। **बुद्धिजीवी कहलाने वालों की जड़ता अनपढ़ जनों के अड़ियलपने से कहीं अधिक घातक होती है।** उन बुद्धिजीवी तर्कशील अड़ियल योद्धाओं से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे उन पुराने-जंग लगे तर्कास्त्रों को त्याग कर वर्तमान विज्ञानवेत्ताओं के नवीन उद्घोषों को सुने और समझें। आज विज्ञान के क्षेत्र में तो नास्तिकता के लिए कोई स्थान है ही नहीं- विज्ञान वाले तो समाज के लिए भी नास्तिकता को दुःखद व घातक मानते हैं।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के ऑर्गेनिक कैमिस्ट्री, सिंकोटाक्सिन में सिंकोनाइन की प्रतिक्रिया की दरें व फास्फो. के लिये मिट्टी-विश्लेषण के विशेषज्ञ डॉ. ऑस्कर लियो ब्राउएर लिखते हैं- **''नास्तिकता का अर्थ है युद्ध और कलह। वैज्ञानिक के रूप में मैं इनमें से एक को भी पसन्द नहीं करता। सिद्धान्त रूप में मैं इसे (नास्तिकता को) तर्क-विरुद्ध व मिथ्या मानता हूँ। जहाँ तक इसके व्यावहारिक पहलू का प्रश्न है, मैं नास्तिकता को घोर विपत्ति का जनक मानता हूँ।''** नास्तिकता की हानियों की चर्चा करके ऑस्कर लियो आस्तिकता अर्थात् ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने के लाभ बताते हुए लिखते हैं- **''यदि ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता और विश्व की सर्वोच्च सत्ता मान लिया जाए तो इससे एक काम अवश्य होगा- मनुष्य-मनुष्य के प्रति (अमानवीयता) का व्यवहार करना छोड़ देगा। अर्थात् मनुष्य में एक नई भावना का उदय होगा, अन्तरात्मा का चैतन्य और निर्मल रूप की वृत्ति-- सबसे प्रेम और सबकी भलाई।।''**

डॉ. ऑस्कर लियो के अनुसार ईश्वर को न मानना युद्ध और कलह का मूल कारण है। आत्मा-परमात्मा को न मानने वाले नास्तिकों के लिए पाप-पुण्य, भले-बुरे और सेवा-शोषण के मध्य विवेक का कोई मूल्य नहीं। मरने के बाद हमारी सम्पूर्ण सत्ता ही नष्ट हो जाती हो, भले-बुरे कर्मों का सुख-दुःख रूपी फल ही न भोगना हो तो जनसेवा व जनसंहार के मायने ही नहीं रहते। ईश्वर नाम की कोई सत्ता नहीं हो तो कोर्ट कचहरी में चैक और जैक का व्यवहार करके दण्ड से बच जाने वाला व्यक्ति अपने कुकर्मों का फल कभी पा ही नहीं सकता। नास्तिक जनों के अनुसार सच अगर यही हो तो संसार में कलह और कुकर्मों को कोई रोक ही नहीं सकता। सच तो यह है कि आत्मा और परमात्मा दोनों ही सत्ताएँ हैं- ये अजर-अमर हैं, न ये जन्मती हैं न मरती हैं। मनुष्य जो कुछ कर्म करता

है, उसका फल परमात्मा ज्यों का त्यों देता है। अथर्ववेद में आता है-'**अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्व पुनराविशाति**' अर्थात् मनुष्य का कर्मफल एक ऐसे पात्र में रखा है जिसमें किञ्चित भी कम या ज्यादा नहीं होता। जो कुछ उस पात्र में पकाने के लिए रखा है, वही पक कर सामने आता है। जब मनुष्य यह जान लेगा कि मैंने जो कुछ भी भला-बुरा कर्म किया है, उसका परिणाम अर्थात् ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में अवश्य भोगना पड़ेगा तो मनुष्य निश्चित रूप से ऑस्कर लियो के अनुसार मनुष्यहीनता का व्यवहार छोड़ देगा।

एक बात यहाँ और विचारणीय है कि क्या ईश्वर के मानने वाले सभी लोग सदाचार व सद् व्यवहार ही करते हैं? क्या उनमें कलह-प्रिय या पाप करने वाले नहीं पाये जाते? यह सच है कि ईश्वर को मानने वालों में बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जिनका व्यवहार किसी भी दृष्टि से नास्तिकों से उत्तम आस्तिकों जैसा नहीं कहा जा सकता। सच पूछो तो ऐसे ही तथाकथित आस्तिक संसार में नास्तिकता के जन्मदाता हैं।

भारत के विख्यात वैज्ञानिक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी लिखते हैं- 'नास्तिक विचारों का उद्गम स्रोत आस्तिकता ही है। आस्तिकों को सोचना चाहिए कि वे नास्तिकता का कारण क्यों बने? कौन सी ऐसी भूल थी कि आस्तिक समुदाय के व्यक्तियों में से ही कुछ को नास्तिकता का आश्रय लेना पड़ा?'' नास्तिकता के जन्म का कारण बनने वाले कथित आस्तिकों पर ऑस्कर लियो की रोचक टिप्पणी भी देखने योग्य है, वे लिखते हैं- ''**क्या यह बात भी उतनी ही विचित्र नहीं लगती कि गैर साम्यवादी (आस्तिक) जगत् का शिक्षित समुदाय व्यवहार में परमात्मा की उपेक्षा करके उसकी सत्ता का खण्डन करता है।**''

सच में देखा जाए तो आस्तिक जगत् के वे लोग जो परमात्मा को सच्चे अर्थों में जान ही नहीं पाते, वे त्र्यवहार में नास्तिकों की कोटि के ही होते हैं। ईश्वर और उसकी कर्मफल व्यवस्था को सच्चे अर्थों में जानने वाला आस्तिक व्यवहार में परमात्मा की उपेक्षा कर ही नहीं सकता। जो व्यक्ति शासन के सिपाही या नैतिक दृष्टि से शक्ति-सम्पन्न लोगों को देखकर तो पाप कर्म से डरता रहे, एकान्त व अनुकूलता देखकर कोई भी अपराध करते समय सर्वव्यापक, सब कुछ जानने वाले, सबके सब कर्मों का न्यायपूर्वक फल देने वाले परमात्मा से नहीं डरता हो, उसे आस्तिक कैसे कहा जा सकता है? सच्चा आस्तिक तो वह होता है जो सर्वत्र व्यापक परमात्मा को सर्वथा अपने निकट (अंग-संग) जानकर, सदा-सर्वदा सदाचरण रूपी कर्त्तव्यपालन में ही लगा रहे, कभी भी किसी के साथ ऐसा व्यवहार न करे, जो कि उसे स्वयं अपने लिए स्वीकार न हो। **परमात्मा की वेदाज्ञा रूप धर्म का निष्ठापूर्वक पालन करनेवाला ही सच्चा धार्मिक और सच्चा आस्तिक कहा जा सकता है।** आस्तिकता और नास्तिकता ऐसी वस्तु नहीं जो बाहरी दिखावे के लिए बाहरी पहचान के रूप में धारण कर ली जाए, यह तो व्यवहार में धारण की गई वह अन्तर्वस्तु है, जो हमारे आचार-विचार से लेकर रहन-सहन व खान-पान तक में पवित्रता या अपवित्रता का विस्तार कर देती है। **आस्तिक कहलाने वाले व्यक्ति को अपने व्यवहार में सद्गुणों व सत्कर्मों को स्थान देकर यह सिद्ध करना पड़ेगा कि उसका जीवन नास्तिक जनों से श्रेष्ठ है, पवित्र है और बहुत ऊँचा है। ऐसा न होने पर आस्तिक और नास्तिक में अन्तर करना वाणी का छल है, समाज व स्वयं के साथ धोखा है।**

चर्चा यह चल रही थी, कि चाहे विज्ञान आगे चलकर ईश्वर को स्वीकार करने लग गया, मगर प्रारम्भ में उसने कथित धर्म पर या उसके मूल ईश्वर की सत्ता पर जो प्रहार किये, उनको लेकर एक ऐसा वर्ग अस्तित्त्व में आ गया जो धर्म और ईश्वर का घोर शत्रु बनकर बुद्धिजीवी नास्तिकों का टोला बन गया। ऐसे ही टोले का नास्तिक शिरोमणि लेनिन प्रख्यात् साहित्यकार मैक्सिम गोर्की को पत्र में लिखता है- 'प्रत्येक धार्मिक विचार, ईश्वर के बारे में प्रत्येक सोच, अथवा ईश्वर के बारे में कुछ भी सोचना, स्वप्न देखना एक उच्चारण के अयोग्य घृणित कर्म है।'' संस्कृत के किसी मनीषी ने लिखा है कि कोई अन्धा मनुष्य दोनों हाथों से टटोलकर जमीन को समतल मान ले और तय कर ले कि सारी धरती ऐसी ही समतल है। इस

विश्वास को लेकर वह दौड़ लगाना शुरू कर दे तो उसकी दुर्गति को कौन टाल सकता है? उसके हाथ जहाँ तक थे, वहाँ तक धरती समतल थी, तो इसका अर्थ यह नहीं कि इस धरती पर कहीं गड्ढे या दीवार हैं ही नहीं। यही स्थिति नास्तिक टोले कम्युनिस्टों की है। अपनी अल्पज्ञता अर्थात् सीमित बुद्धि को लेकर सर्वज्ञता का दावा करने वाले कम्युनिस्टों के लिए प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री बेकन के लेख 'नास्तिकता' की निम्न पंक्तियाँ आँखें खोलने वाली हो सकती हैं- **''थोड़ा सा तत्त्वज्ञान मनुष्य के मन को नास्तिकता की ओर झुका देता है, किन्तु तत्त्वज्ञान में गहराई मनुष्य के मन को धर्म अथवा आस्तिकता की ओर ले आती है, क्योंकि जब मनुष्य का मन विविध कारणों को बिखरा हुआ पाता है, तब कई बार यह सम्भव है कि वह उन कारणों में ही अटक जाए और आगे न जाए, किन्तु जब वह उन कारणों की शृंखला को परस्पर संयुक्त और सम्बद्ध करता है, तो अवश्य उसे परमेश्वर की ओर उड़ना पड़ता है।''**

कम्युनिस्टों की समस्या यह है कि वे हल्दी की कुछ गाँठें पाकर स्वयं को बहुत बड़ा पंसारी मान बैठे हैं। सम्भव है मार्क्स और लेनिन को किन्हीं सामाजिक कारणों- जैसे धर्म के नाम पर गरीब मजदूर वर्ग का क्रूर शोषण, धर्म की व ईश्वर की मनमानी व्याख्या करके जनता पर होने वाले अमानवीय अत्याचार आदि को लेकर धर्म व ईश्वर से वितृष्णा हुई हो, मगर इनको नकारने के लिए इन दोनों ने विज्ञान के तथ्यों का ही सहारा लिया है, और आज के कम्युनिस्ट भी वही दोहरा रहे हैं। अगर ये विज्ञान के तर्कों का सहारा न लेते तो इतने बड़े जन समुदाय को ईश्वर-विमुख करने में कभी समर्थ न होते। उन्हें नहीं पता कि विज्ञान अब बहुत आगे बढ़ चुका है। अब उनके वे पुराने तथ्य और तर्क आपस में उलझ कर रह जाते हैं। डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती लिखते हैं- **'आस्तिकों के दिये गए उत्तरों से भी अधिक भ्रान्तिपूर्ण, क्लिष्ट और असम्भवनीय उत्तर उनके हैं, जो नास्तिकता के आधार पर गुह्य (गम्भीर) प्रश्नों की व्याख्या करने का प्रयास करते हैं व बहुधा ऐसी अटकलें लगाते हैं, जो अपने को भी सन्तोष नहीं देतीं।''**

आज विज्ञान बहुत आगे बढ़ गया है, और निरन्तर बढ़ रहा है। जो प्रश्न कल अनसुलझे लग रहे थे, आज उनके समाधान भी पुराने पड़ने लगे हैं। नास्तिकों का तो अटकलें लगाकर काम चल जाता है, वे हठ और दुराग्रहपूर्वक कुछ भी कह सकते हैं, उन्हें इनसे कुछ भी हानि नहीं, लेकिन विज्ञान में ऐसा कुछ नहीं चलता। अटकलें व पूर्वाग्रहों को लेकर विज्ञान सृष्टि के रहस्यों का अनावरण नहीं कर सकता। विज्ञान एक प्रश्न का सच्चा समाधान निकालकर उसकी भित्ति पर नए अनुसन्धान का महल खड़ा करता है। नास्तिक समुदाय के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वे अपने पूर्वाग्रहों को त्यागकर विज्ञान के बढ़ते कदमों का खुले हृदय से स्वागत करें। विज्ञान के विरुद्ध जड़ता के सहारे जब कथित धर्म और ईश्वर सम्बन्धी मान्यताएँ नहीं टिक सकीं तो ये नास्तिकता क्या चीज है? कहीं ऐसा न हो कि आने वाली सन्तति इन प्रकृतिवादी नास्तिकों की मूर्खता का उपहास करे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई पाश्चर तो यही भविष्यवाणी करते हैं-**'आगे आने वाली सन्तति आधुनिक प्रकृतिवादी दार्शनिकों की मूर्खता पर हँसेगी! जितना अधिक मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूँ, मैं परमेश्वर के कार्यों को देखकर आश्चर्यचकित होता हूँ।''**

प्रसंगवश यहाँ इस बात पर भी विचार कर लेना चाहिए कि धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में सच्चाई क्या है और भ्रान्तियाँ कौन-कौन सी हैं? विज्ञान जिस ईश्वर को मानने लगा है क्या वास्तव में यह विज्ञान की नई खोज है या विज्ञान-मान्य ईश्वर की सत्ता कभी जन सामान्य में प्रचलित भी रही है? अगर रही है तो उसमें भाँति-भाँति के अवैज्ञानिक विचार व भ्रान्त धारणाएँ कैसे मिल गईं? ये प्रश्न हमें धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में एक नई दृष्टि देने वाले हैं। सच यह है कि जब परमात्मा ने इस जगत् को बनाया, इस धरा धाम पर मनुष्य नाम के प्राणी का अवतरण हुआ- तभी उसने मनुष्य के लिए संसार में रहने-सहने, खाने-पीने व जगत् को जानने-समझने के लिए उसे अपना ज्ञान वेद के रूप में प्रदान किया। वेद संसार के साहित्य में प्राचीनतम पुस्तक होने के साथ-साथ सम्पूर्ण सृष्टि को जानने-समझने के लिए प्रामाणिक ग्रन्थ है। ईश्वर ने इस

ब्रह्माण्ड को जिस रीति से, जिस उपयोग के लिए बनाया है, वेदों में उसकी यथावत् जानकारी है। चूंकि वेद परमात्मा ने मानव के उपयोग के लिए प्रकट किये हैं, तो निस्संदेह मनुष्य के जीवन में काम आने वाली सभी विद्याएँ वेद में होनी चाहिएँ। विज्ञान इस बात को मानता है कि परमात्मा ने इस जगत् में कुछ भी ऐसा नहीं बनाया, जो अनुपयोगी हो, तो तय है कि उसके किसी काम में अधूरापन भी नहीं होना चाहिए। न्यूटन अनीश्वरवादियों से प्रश्न करता है- '**क्या कारण है कि प्रकृति कोई काम व्यर्थ नहीं करती?**'' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए न्यूटन लिखते हैं- '**एक निराकार, चेतन-बुद्धिमान सर्वव्यापक है, जो सब वस्तुओं को यथार्थ रूप में सम्पूर्णता से देखता और अन्तर्यामी रूप से ठीक-ठीक जानता है।**''

न्यूटन का यह कथन सिद्ध करता है कि परमेश्वर का कोई काम न तो व्यर्थ है और न न्यून। वेद भी परमेश्वर प्रदत्त ज्ञान है तो उसमें भी पूर्णता होनी चाहिए। ऋषि-महर्षियों ने वेद को बड़ी गहराई से समझा-महर्षि मनु ने घोषणा की- '**वेदेषु सर्वा विद्या सन्ति मूलोद्देश्यतः**' अर्थात् वेदों में मूल (बीज) रूप से सभी विद्याएँ हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी यही मानते हैं- 'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है''। जब वेद में सब विद्याएँ मूल रूप से हैं तो ईश्वर का विज्ञान सम्मत सच्चा ज्ञान भी वेद में अवश्य होगा। जो वेद का अध्ययन-स्वाध्याय करते हैं, वे जानते हैं कि वेद परमात्मा को निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सृष्टिकर्त्ता और सर्वज्ञ आदि असंख्य गुण वाला बताते हैं। आज के जो कथित धर्मग्रन्थ व धर्मगुरु हैं, जो परमात्मा को आकाश या पाताल, समुद्र या पर्वत आदि स्थान विशेष में बताते हैं, वे सब भ्रान्तियों के शिकार हैं। वेद परमात्मा को अजन्मा व अजर-अमर बताते हैं, वह न जन्म लेता है, न मरता है।

यह स्पष्ट हो जाने के बाद कि आधुनिक विज्ञान की ईश्वर सम्बन्धी मान्यताएँ कोई नई खोज नहीं है, बल्कि लाखों, करोड़ों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों के द्वारा जन सामान्य के लिए उपदेश व प्रवचनों के रूप में प्रकट की जाती रही हैं। चूंकि धर्म भी ईश्वर से सम्बन्ध ज़ोड़ने, उसे पाने का एक माध्यम रहा है, तो धर्म भी कोई नई वस्तु नहीं है, यह भी स्वतः सिद्ध है! प्रश्न होगा कि जब हमारे पास ईश्वर का सच्चा स्वरूप एवं विज्ञान-आधारित धर्म था, तो फिर ये पाखण्डों, अन्धविश्वासों और बाह्याडम्बरों का पुलिन्दा धर्म के नाम पर कैसे चल निकला, तथा ईश्वर के नाम पर कल्पित देवी, देवता आकाश, पाताल, समुद्र, शिखरों एवं काशी, काबा में कैसे स्थापित हो गए? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए हमें सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल की शरण में जाना होगा! कपिल लिखते हैं- '**उपदेष्ट्रोपदेष्ट्रत्वात् तत्सिद्धिः**'' '**इतरथाऽन्धपरम्परा**'- अर्थात् समाज व राष्ट्र में यदि सत्योपदेशों का कार्य भली-भाँति अनवरत चलता रहता है, तो जन समुदाय सत्य के महत्त्व को जानकर सत्यभाषण व सदाचरण रूपी धर्म का पालन करता रहता है और हमारा मनुष्य जीवन सत्यनिष्ठ होकर सफल हो जाता है। जब यह सत्य प्रसारक अभियान बन्द हो जाता है, एक वर्तमान पीढ़ी अपनी पूर्व पीढ़ी के अनुभव सिद्ध ज्ञान को स्वयं आत्मसात करके, उससे सुख लाभ प्राप्त करके आने वाली पीढ़ियों के लिए संस्कार के रूप में प्रत्यारोपित नहीं कर पाती तो उस समाज व राष्ट्र में अन्धपरम्पराएँ जन्म लेने लगती हैं।

शेष भाग अगले अंक में.....

कल्पित संन्यासी

जब एषणा ही नहीं छूटी तो संन्यास क्योंकर हो सकता है? पक्षपात रहित सत्योपदेश से जगत् का कल्याण करने में अहर्निश प्रवृत्त रहना संन्यासियों का मुख्य काम है। अब अपने अधिकार कर्मों को नहीं करते पुनः संन्यासादि नाम धरना व्यर्थ है। नहीं तो, जैसे गृहस्थ व्यवहार और स्वार्थ में परिश्रम करते हैं, उनसे अधिक परिश्रम परोपकार करने में संन्यासी भी तत्पर रहे, तभी सब आश्रम उन्नति पर रहें। जब लों वर्तमान और भविष्यत् में संन्यासी उन्नतिशील नहीं होते, तब लों आर्य्यावर्त और अन्य देशस्थ मनुष्यां की वृद्धि नहीं होती। **(स. प्र. स. ११)**

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

ईश्वर (वैज्ञानिकों की दृष्टि में), प्रस्तुतकर्ता एवं अनुवादक - पं. क्षितीश कुमार वेदालङ्कार

मूल्य -१५० रु., **पृष्ठ** - २६४

दुनिया में दो तरह के मनुष्य पाये जाते हैं, एक वो जो भगवान् को अर्थात् उसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और दूसरे वे जो भगवान् जैसी किसी सत्ता पर भरोसा नहीं करते। पहले को आस्तिक और दूसरे को नास्तिक कहा जाता है। नास्तिकों के अपने तर्क हैं और इन तर्कों में वे प्राय: वैज्ञानिक प्रयोगों, आविष्कारों, विज्ञान की प्रगति की दलीलों का ही हवाला देते हैं। विज्ञान है तो बहुत अच्छी चीज़, पर अगर कहीं किसी वैज्ञानिक की चूक से कुछ गलत निष्कर्ष आ जाये तो उसे आंखें बन्द करके मान लिया जाता है। आखिर वैज्ञानिक भी तो मनुष्य ही है, गलती तो वह भी करता ही है। इस तरह एक नये प्रकार का अन्धविश्वास 'वैज्ञानिक अन्धविश्वास' जन्म लेता है और दो अन्धविश्वास आपस में टकरा जाते हैं। जो भगवान् को नहीं मानता, वह भी सोचना नहीं चाहता, केवल दूसरों के भरोसे चलता है और जो मानता है, उसने भी अपना दिमाग बाबाओं के पल्ले बाँध रखा है। इन दोनों से अलग कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपने मस्तिष्क को थोड़ा मेहनत करने देते हैं और सत्य तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। ऐसे ही कुछ वैज्ञानिकों के विचारों को इस पुस्तक में संकलित किया गया है। जरूरी नहीं कि ये सभी वैज्ञानिक भगवान् को स्वीकार करते ही हों, पर वह इतना तो स्वीकार करते ही हैं कि कुछ तो है जो विज्ञान की पकड़ से बाहर है। उनकी इसी 'ना' में शायद 'हाँ' छिपी है, बस अन्तर इतना ही है कि उनकी वह खोज बिना नाम वाली है और वेद ने उसको नाम दे दिया है- 'ईश्वर'।

त्रैतवाद- लेखक-विद्यामार्तण्ड पंडित बुद्धदेव विद्यालङ्कार

मूल्य-२० रु., **पृष्ठ** -४०

परिचय- पं. बुद्धदेव जी एक बार अपने आर्य मित्र के पास मिलने गये। उन्होंने देखा कि मित्र का बड़ा बेटा कम्युनिस्ट विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित है। कारण यह कि वह देश-विदेश में घूमकर आया है और किताबें भी कम्युनिज़्म की ही पढ़ता है। पंडित जी ने वह पुस्तक मांगी, जिससे कम्युनिज़म का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था। उस पुस्तक का नाम था The Origin of life on the Earth, जिसका विषय था, 'पृथ्वी पर पहली बार जीवन कैसे आया?' बुद्धदेव जी ने इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़कर इसकी समीक्षा की और उस समीक्षा की एक पुस्तक बन गई- त्रैतवाद।

आख्यातिक- लेखक- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य- २५० रु. , **पृष्ठ** - ६०८

परिचय- महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन पर बहुत बल देते थे। विशेषकर व्याकरण पर, जो कि सब शास्त्रों की कुंजी है। संस्कृत व्याकरण को सरल एवं सुगम बनाने के लिये उन्होंने पाणिनीय व्याकरण के सहायक ग्रन्थों के रूप में 'वेदांग प्रकाश' नाम से १४ पुस्तकें लिखीं। उनमें से आठवाँ भाग यह 'आख्यातिक' है। इसमें मूलत: धातु पाठ की व्याख्या है। साथ ही उन धातुओं के रूप निर्माण की प्रक्रिया को भी समझाया गया है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली
पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।**

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

संस्था समाचार

डॉ. धर्मवीर स्मृति व्याख्यानमाला - परोपकारिणी सभा के भूतपूर्व प्रधान एवं वेदों के व्याख्याता आचार्य डॉ. धर्मवीर जी की द्वितीय पुण्यस्मृति में ६ अक्टूबर को सायंकाल ४.३० बजे ऋषि उद्यान की पवित्र यज्ञशाला में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात् मुख्य वक्ता बैंगलुरु निवासी डॉ. सतीश शर्मा जी (शल्य चिकित्सक-हृदय रोग) ने बताया कि डॉ. धर्मवीर जी के साथ उन्होंने कई बार वेद और विज्ञान विषय पर चर्चा की। ईश्वर, जीव, प्रकृति, आयुर्वेद, धार्मिक, सामाजिक और समसामयिक राजनैतिक विषयों पर भी वार्तलाप होते थे। वे निर्भीक वक्ता और विद्वान् लेखक थे, जिज्ञासुओं के प्रश्नों का तत्काल उत्तर देते थे। वह बहुत धैर्यवान् और सहनशील थे तथा आर्यजगत् के अनुपम विद्वान् थे।

व्याख्यानमाला के द्वितीय व्याख्यान में 'ईश्वर की सत्ता-वेद और विज्ञान में' इस विषय पर जहाँ डॉ. सतीश शर्मा ने आधुनिक वैज्ञानिकों के तर्कों और सिद्धान्तों का उद्धरण दिया, वहीं वेद, उपनिषद्, वैशेषिक दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के तर्कों एवं प्रमाणों को प्रस्तुत करते हुए बहुत ही सरल भाषा में व्याख्या की। कार्यक्रम की अध्यक्षता दैनिक भास्कर समूह, जयपुर के प्रबन्ध सम्पादक श्री जगदीश शर्मा जी ने की। आपने कहा कि डॉ. धर्मवीर जी बहुत सहज और स्वाभाविक थे। व्यक्तियों में दोष होने पर भी उनके गुणों को वह अवश्य ही स्वीकार करते थे। व्याख्यान के विषय पर चर्चा करते हुए आपने कहा कि डॉर्विन का विकासवाद का सिद्धान्त 'बन्दर से मनुष्य बने'- पुरातत्त्व के आधार पर और पाँच हजार वर्ष से उपलब्ध लिखित मानव-इतिहास के आधार पर किसी भी प्रकार से प्रमाणित नहीं होता है। सभा मन्त्री श्री ओममुनि ने मुख्य वक्ता डॉ. सतीश शर्मा और मुख्य अतिथि श्री जगदीश शर्मा का शॉल ओढ़ाकर एवं ओ३म् का प्रतीक भेंटकर अभिनन्दन किया। सभा के वरिष्ठ सदस्य श्री कन्हैयालाल जी ने अतिथि विद्वानों तथा श्रोताओं का धन्यवाद किया और डॉ. धर्मवीर जी से संबन्धित संस्मरण सुनाये। सभा के सदस्य डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी जी ने मंच संचालन किया। श्री सोमेश पाठक ने डॉ. धर्मवीर पर स्वलिखित कविता पाठ किया- 'ढूंढती है हर तरफ बस आपको मेरी निराशा.......'। कार्यक्रम में श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' एवं उनकी पुत्री-दामाद (सुवर्चा व अंकुर भार्गव), परोपकारिणी सभा के उप प्रधान श्री रामगोपाल गर्ग, संयुक्त मन्त्री डॉ. दिनेश शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल, आर्यवीर दल के जिला मन्त्री श्री विश्वास पारीक, स्वामी शंकरदेव, गुरुकुल के ब्रह्मचारीगण, श्री सोहनलाल कटारिया, श्री वासुदेव आर्य, नगर आर्यसमाज के पदाधिकारी व सदस्यगण तथा अन्य आर्यजन उपस्थित रहे।

भव्य ऋषि मेला की तैयारियाँ- ७ अक्टूबर रविवार को प्रात:काल यज्ञशाला में मन्त्री श्री ओममुनि जी की अध्यक्षता में सभा के अधिकारियों, सदस्यों और कार्यकर्त्ताओं की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संयुक्त मन्त्री डॉ. दिनेश शर्मा, श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, श्री विश्वास पारीक, श्री सुरेन्द्र सिंह, श्री लक्ष्मण मुनि, श्री मोहनचन्द, श्री आशीष कटारिया, डॉ. मृत्युञ्जय शर्मा, श्री जी. पी. पाठक, श्रीमान् दायमा, श्री मुमुक्षु मुनि, श्री विष्णु शर्मा, श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, श्री पंकज कुमावत, स्वामी शंकरदेव, श्री प्रभाकर, श्री सोमेश, श्री रमेश मुनि, श्री वीरप्रकाश तापड़िया, श्री विजय गहलोत, श्री अमित पाठक, श्री चन्द्रप्रकाश भटनागर 'चांद', श्री सोहनलाल कटारिया, श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती कुमुदिनी आर्य, श्री शान्तिदेव सोमानी, श्री सत्यनारायण, श्री नवीन मिश्रा, श्री श्याम, श्री योगमुनि जी आदि व्यक्ति उपस्थित रहे। अजमेर नगर तथा आसपास के क्षेत्रों में मेले का प्रचार, मेले में आनेवाले ऋषिभक्तों के पंजीकरण, आवास, ध्वजारोहण, यातायात एवं वाहन, महिलाओं एवं पुरुषों के लिये अलग-अलग व्यवस्था, भोजन-प्रसाद, विद्वानों की व्यवस्था, सुरक्षा-व्यवस्था, मंच साज-सज्जा, संचालन, टेन्ट, लाइट, माइक, स्टॉल, इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट माध्यमों में समाचार प्रेषण, जल आपूर्ति, साफ-सफाई आदि कार्यों के लिये अधिकारी

तथा कार्यकर्त्ता नियत किये गये।

गुरुकुल पुनः व्यवस्थित- परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में ११ ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं। आचार्य विद्यादेव जी के सान्निध्य में विद्यार्थियों को अष्टाध्यायी व्याकरण एवं संस्कृत साहित्य, रचना अनुवाद कौमुदी के साथ-साथ अन्य बौद्धिक विषयों का अध्यापन भी कराया जा रहा है। श्री आर्यमुनि जी संगीत सिखा रहे हैं।

पुण्यतिथि एवं जन्मदिवस पर यज्ञ- ६ अक्टूबर को सभा के पूर्व प्रधान डॉ. धर्मवीर जी की पुण्यतिथि के अवसर पर श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' तथा उनके पुत्री-दामाद (सुवर्चा-अंकुर) ने यज्ञ किया। ७ अक्टूबर को श्री रमेश मुनि जी ने अपने इंग्लैण्ड निवासी पुत्र संजीव बंसल के जन्मदिन पर यज्ञ किया। ८ अक्टूबर को अजमेर निवासी श्री नवीन मिश्रा की पुत्रवधू के जन्मदिन पर पुत्र श्री गौरव मिश्रा और पुत्रवधू श्रीमती चित्रा मिश्रा ने यज्ञ किया। अतिथि यज्ञ के सभी होताओं के लिये परोपकारिणी सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

दैनिक यज्ञ एवं प्रवचन- ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में विभिन्न विषयों पर आर्य विद्वानों के व्याख्यान निरन्तर चलते रहते हैं। प्रातः यज्ञोपरान्त आचार्य विद्यादेव जी ने श्राद्ध-तर्पण आदि कई सामयिक विषयों पर वैदिक मान्यताओं को सप्रमाण प्रस्तुत किया। इन व्याख्यानों की वीडियो रिकॉर्डिंग कर यू-ट्यूब पर भी डाला जा रहा है, ताकि समस्त जिज्ञासु जन इससे लाभ ले सकें। यू-ट्यूब पर ये व्याख्यान **PAROPKARINI SABHA** चैनल पर देख सकते हैं।

अतिथि- अजमेर नगर में केसरगंज स्थित ऐतिहासिक महर्षि दयानन्द आश्रम, वैदिक यन्त्रालय, अनुसन्धान भवन एवं वैदिक पुस्तकालय, ऋषि निर्वाण स्थल-भिनाय कोठी, अन्त्येष्टि स्थल-मलूसर, ऋषि उद्यान स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती संग्रहालय, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल आदि महत्त्वपूर्ण स्थानों को देखने, संन्यासियों-विद्वानों से मिलकर शंका-समाधान करने, उपदेश ग्रहण करने, व्याकरण-दर्शन-वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन करने, दैनिक यज्ञ एवं प्रवचन से लाभ लेने, पुष्कर आदि पर्यटन स्थलों में भ्रमण एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए देश-विदेश के संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, पुरोहित, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, आर्यवीर, आर्यवीरांगना, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता, विद्यालय-महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्रायें, गृहस्थ स्त्री-पुरुष और बच्चे निरन्तर आते रहते हैं। सभी आगन्तुकों के निवास एवं नाश्ता, भोजन, दूध आदि की समुचित व्यवस्था ऋषि उद्यान में उपलब्ध रहती है। पिछले १५ दिनों में नसीराबाद, जयपुर, सवाई माधोपुर, ब्यावर, चुरु, हिसार, नोएडा, झज्जर, रोहतक, जालंधर आदि स्थानों से २७ अतिथिगण ऋषि उद्यान पधारे।

इसी क्रम में उत्तराखंड आर्य उप प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री प्यारेलाल आर्य तथा कनाडा में निवास करने वाले श्री अश्विनी राजपाल के साथ अन्य १६ आर्यजन दर्शनार्थ ऋषि उद्यान आये।

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान में अष्टाध्यायी अनुक्रम से संस्कृत व्याकरण, दर्शन एवं अन्य ऋषिकृत ग्रन्थों की कक्षाएँ प्रारम्भ हो रही हैं। अध्ययन आर्ष पाठविधि से कराया जायेगा। विद्यार्थियों के आवास एवं भोजनादि का सम्पूर्ण व्यय सभा की ओर से किया जायेगा। गुरुकुल सम्बन्धी सभी नियमों एवं दिनचर्या आदि का पालन अनिवार्य होगा। विद्यार्थी की आयु न्यूनतम १६ वर्ष हो। इच्छुक छात्र निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें।

आचार्य विद्यादेव, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल,

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)

सम्पर्क-९८७९५८७७५६, ०१४५-२४६०१६४, Email- psabhaa@gmail.com

महर्षि दयानन्द के बलिदान के विषय में दो मत

मोहनलाल तँवर

इस ३० अक्टूबर, सन् २०१८ को स्वामी जी महाराज का बलिदान हुए १३५ वर्ष हो पूरे हो जायेंगे। स्वामी जी के बलिदान की घटना जो प्रचलित है उसके अनुसार तो नन्हीं भगतन द्वारा षड्यन्त्रपूर्वक उनके पाचक जगन्नाथ को अपने प्रभाव में करके दूध में घातक विष मिलाकर पिलाने की बात सुनी है। महर्षि ने राजस्थान के क्षत्रियों की शूरवीरता के विषय में काफी सुना था, साथ में उनको यह भी ज्ञात हुआ कि ये राजपूत राजा भोग-विलास में डूबकर अपना यश खो रहे हैं तथा देशभक्ति से हटकर ब्रिटिश सरकार की उन्नति में लगे हुए हैं, इसी कारण वे शाहपुराधीश महाराजा नाहरसिंह जी एवं मेवाड़ अधिपति महाराजा सज्जनसिंह जी से मिले तथा उन्हें मनुस्मृति के अनुसार राजाओं के कर्त्तव्यों की प्रेरणा दी। स्वामी जी का प्रभाव उन पर बहुत उत्तम हुआ और वे आर्यसमाज के सभासद् भी बन गये।

इधर कहते हैं कि उनकी ख्याति सुनकर जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्त सिंह जी ने भी उन्हें जोधपुर पधारने का निमन्त्रण दिया, महाराजा जसवन्तसिंह जी एक नन्हीं भगतन नाम की वेश्या के मोहजाल में फँसकर अपने राजधर्म को भूल चुके थे। स्वामी ने उन्हें सदाचार का उपदेश दिया और एक पत्नीव्रत के उपदेश के अन्तर्गत एक कटुवचन बोल गये कि ''सिंह कभी कुतिया के साथ संबन्ध नहीं बनाते।'' यह शब्द नन्हीं जान को ऐसे चुभे कि स्वामी जी को रसोइये द्वारा दूध में काँच पीस व विष मिलाकर पिला दिया, इसी से उनकी मृत्यु ३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर स्थित भिनाय कोठी में दीपावली के दिन हो गई।

उक्त घटना तो हम प्रारम्भ से ही सुनते आये हैं और इसी को अधिकृत मानते हैं, परन्तु जोधपुर के राव राजा तेजसिंह वर्मा ने उनकी मृत्यु के विषय में निम्न वर्णन किया है-

स्वामी जी के पास एक कल्लू रसोइया रहता था, उसने दो अशर्फी और एक दुशाला चुराया था। तेजसिंह लिखते हैं उस पर स्वामी जी ने मेरे सामने उसे उसके 'पाप' के लिए बहुत ताड़ना की। इसके पश्चात् उसने कुछ दुरात्माओं से मिलकर न मालूम खाने के अन्दर या दुग्ध में कुछ चीज़ दी कि सवेरे उठते ही बहुत जोरों के साथ स्वामी जी को जुकाम की शिकायत हुई। उनको मालूम हो गया कि मुझे जहर दिया गया है। तब वे पानी में नमक मिलाकर कै करने लगे, परन्तु कोई फायदा न हुआ और पसली में शूल शुरु हो गया, तो मुझको (तेजसिंह जी को) बुलाया गया और कहा कि ''श्री दरबार को अरज करो कि मेरी पसली में बहुत जोर का शूल चलता है और मेरी बीमारी सुनकर बहुत से आर्य लोग यहाँ आयेंगे, उनको कष्ट होगा, इसलिए मेरा अजमेर जाना ठीक है।'' तब मैंने (तेजसिंह जी ने) श्री दरबार को व महाराजा श्री प्रतापसिंह जी साहब को सूचना दी कि स्वामी जी को बहुत तकलीफ है, उस पर श्री दरबार और महाराज साहब पधारे और उनके पाँव छूकर श्री दरबार ने प्रार्थना की ''महाराज आप आबू पधारें, क्योंकि मेरे रहने का वहाँ बंगला है, उसमें आप रहिये और मेरे सर्जन डॉक्टर करनैल ऐडम वहाँ पर हैं वे आपका इलाज करेंगे।'' अन्तत: स्वामी जी को आबू भेजने का निश्चय हो गया और साथ में डॉक्टर सूरजमल जी व मेरा (तेजसिंह का) कामदार नवलदान जी, अमरदान जी, मुन्शी दामोदर दास जी आदि को साथ भेजा गया। जिस समय स्वामी जी को पालकी में लिटाकर प्रस्थित किया गया, श्री दरबार स्वयं पालकी को पकड़ के हम लोगों सहित, साथ चले। स्वामी जी के बहुत कहने पर आप वापिस पधारें और दरबार ने उनके पाँव छूकर ये कहा कि ''महाराज जल्द स्वस्थ होकर हमको दर्शन दीजिये'' इतना कहने के साथ दरबार की आँखों में से आँसुओं की धार बहने लगी। हम लोग भी उनकी आज्ञा से चरणस्पर्श करके दरबार के साथ लौट आये। आगे चलने पर फिर पाली स्टेशन पर स्वामी जी को वेग के साथ पेचिश व दस्त होने लगे और शूल जोर से होने लगा, उस समय डॉक्टर सूरजमल ने कहा मैं आपको कुछ क्लोरोडिन देना चाहता हूँ जिससे कि दस्त में कमी हो। स्वामी जी महाराज ने पूछा कि इसमें क्या-क्या औषधि है, सूरजमल

जी ने कहा इसमें अफीम है। स्वामी जी महाराज ने कहा ''प्राण भले ही चले जायें पर मादक द्रव्य सेवन कभी न करूँगा। अगर मैं मूर्छा में होऊँ तो भी ऐसी औषधि कदापि काम में न लेना।''

इसके पश्चात् स्वामी जी कुछ दिन आबू रहकर अजमेर चले गये, वहाँ वैदिक युग के चमकते सूर्य का अस्त हो गया। कुछ लोग स्वामी जी को असहिष्णु कहते हैं। क्या उसे असहिष्णु कहा जा सकता है, जिसने अपने घातक रसोइया को अपने पास से खर्च देकर कहा ''भाग जाओ नहीं तो महाराज तुम्हें दण्ड देंगे'' इस उदारता की तुलना कहाँ मिल सकती है। जिस दिन तक सूर्य और चन्द्र भूमण्डल पर प्रकाश करते हैं, ऋषि की जीवनी मनुष्यों के जीवन को पथ-प्रदर्शक बनी रहेगी।

उपरोक्त वर्णन राव राजा तेजसिंह वर्मा की कलम से निकला है। स्वामी जी के प्राण-हरण की दोनों घटनाओं में सामंजस्य नहीं बैठता। प्रथम घटना ही प्रामाणिक है जिसे स्वामी जी के जीवनीकारों एवं इतिहासकारों ने भी गहन अनुसंधान के पश्चात् सत्य माना है। राव राजा तेजसिंह ने महर्षि की प्रशंसा में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी। उन्होंने उनके जीवन को कुपन्थों का संहारक बताते हुए एक दोहे का भी उल्लेख किया है-

मदमदान्त हाथी भयो ज्ञान महावत क्रीध।
ज्यों ज्यों चले कुपन्थ में त्यों त्यों अंकुश दीध।।

स्वामीजी के लिए रावराजा तेजसिंह ने यह भी लिखा कि घोर निद्रा में पड़े हुए भारतवर्ष की आँखें नहीं खुलीं, निद्रा में ही नहीं, प्रत्युत् शताब्दियों से बाहर और घर के आक्रमणों से क्लोरोफॉर्म की दशा में बेहोश पड़े हुए देखकर महर्षि ने वेदरूपी अमोनिया छिड़का है तब भारतवर्ष होश में आया और आँखें खोलीं। महर्षि ने गंभीर शब्दों में कहा ''मत डरो, साहस करो, गोमाता की रक्षा करो, देश की सेवा करो, धर्म पर आरूढ़ रहो, वेदों का उपदेश सुनो, साहस और धैर्य धारण करो, जैसी कि वेदों में आज्ञा है। चारों वर्ण इसी के अनुसार चलो, यही तुम्हारे लिये बीजमन्त्र है''। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा, ऐसा ही करने पर थोड़े दिनों में तुम्हारे घर-बार का धन्धा तुम्हारे हाथ में आ जाएगा।

तेजसिंह के स्वामीजी के प्रति उक्त विचार श्लाघनीय हैं, परन्तु प्रतीत होता हैं कि अपने मारवाड राज्य की न्यूनता छुपाने को यह सब कुछ लिखा है। इस लेख में तेजसिंह ने ना तो वहाँ के राजाओं की विषयासक्ति, लम्पटता के विषय में कुछ लिखा, ना नन्हीं भगतन का विष देने में हाथ होने के विषय में ही लिखा। लगता है उन्होंने जो कुछ लिखा, राज्य के कलंक को छुपाने हेतु लिखा। डॉ. सूरजमल जी की चर्चा भी सही नहीं है कि उनके द्वारा दी गई औषधि स्वामी जी ने ग्रहण नहीं की, जबकि उन्हीं की चिकित्सा में स्वामी जी रहे। हकीम अलीमर्दान का भी जिक्र नहीं किया जो चिकित्सा के नाम पर महर्षि को गलत औषधियाँ देता रहा। थोड़ी-सी चोरी जो कल्लू पाचक ने की, इस कर्म के लिए स्वामी जी ने हो सकता हो कुछ कह दिया हो, परन्तु यह असम्भव है कि इसके प्रतिकारस्वरूप वह व्यक्ति स्वामी जी को विष दे दे। देशी राजे महाराजे विषय-वासनाओं में डूबे हुए थे और वे नन्हीं भगतन पर आसक्त थे, अत: उसको सर्वथा बचा लिया गया और वह मृत्युपर्यन्त राजा की रखैल रही, यहाँ तक उसको सम्मान मिला कि जोधपुर रेलवे स्टेशन से पहिले जो स्टेशन आता है उसका नामकरण इन नन्हीं वेश्या भगतन के नाम 'भगत की कोठी' कर दिया जो इस राष्ट्र के लिए कलंक से कम नहीं।

- शास्त्रीनगर, अजमेर

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ अक्टूबर २०१८ तक)

१. श्रीमती यशोदा रानी, कोटा २. श्रीमती अंजलि कपूर, दिल्ली ३. स्वस्तिकॉम चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती ४. श्री शिव कुमार मदान, नई दिल्ली ५. श्री लक्ष्मण मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ६. श्री जयपाल गर्ग, नई दिल्ली ७. श्री सुरेन्द्र सिंह, ऋषि उद्यान, अजमेर ८. श्री महेन्द्रसिंह यादव, रेवाड़ी ९. श्री रमेश मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर १०. डॉ. किशोर काबरा, अहमदाबाद ११. मेजर (रि.) श्री अनिल कुमार यादव, रेवाड़ी १२. श्री कपिल कुंगवानी, सूरत १३. श्री विजयसिंह गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर १४. श्री अतुल अग्रवाल, जयपुर १५. डॉ. किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर १६. श्री सुरेन्द्र सिंह, ऋषि उद्यान, अजमेर १७. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर १८. श्री रणदीप आर्य, पानीपत १९. श्री सुरेन्द्र, ऋषि उद्यान, अजमेर २०. शंकरराव भालेकर, तेलंगाना २१. श्री उमेश आर्य, लाडनूं २२. श्रीमती सुशीला मिश्रा, जोधपुर २३. श्रीमती मिथलेश आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर २४. श्री आनन्द मनीषी वानप्रस्थी, लखनऊ २५. श्री लालबहादुर, लखनऊ २६. वैद्य श्री कान्हाराम, श्रीगंगानगर २७. श्री मान दाहिमा, ऋषि उद्यान, अजमेर २८. श्री सूरजप्रकाश कच्छावा, जोधपुर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ अक्टूबर २०१८ तक)

१. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, रुड़की २. श्री शिवकुमार कुर्मी, जयपुर ३. श्री दयानन्द वर्मा, भीलवाड़ा ४. श्री वीरेन्द्रसिंह दलाल, बहादुरगढ़ ५. श्रीमती पुष्पा देवी, वाराणसी ६. श्री बृजेश आर्य व श्री जगतसिंह आर्य, रोहतक ७. श्री बसन्त कुमार व श्री जगतसिंह आर्य, रोहतक ८. श्री मनोज कसारा, जोधपुर ९. श्री जयदेव अवस्थी, जोधपुर १०. श्रीमती प्रेमलता मून्दड़ा, मन्दसौर ११. श्रीमती आशा आर्य, लखनऊ १२. श्री जितेन्द्र कुमार, रेवाड़ी १३. श्री रमेश मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर १४. श्री चन्द्रप्रकाश झँवर, भीलवाड़ा १५. डॉ. किशोर काबरा, अहमदाबाद १६. श्री विजय सिंह गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर १७. श्री जवाहर गोदीनुराम, अहमदाबाद १८. श्री रामरतन विजयवर्गीय, अजमेर १९. श्री सुरेश चन्द आर्य, दिल्ली २०. श्री रमेश आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर २१. डॉ. किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर २२. श्री रणदीप आर्य, पानीपत २३. श्री शम्भुदयाल मीणा, अजमेर २४. श्रीमती पिश्तो देवी, दिल्ली २५. श्री हरिकृष्ण आर्य, रोहतक २६. श्रीमती मिथलेश आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर २७. श्री अरुण कुमार यादव, लखनऊ २८. श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, आजमगढ़ २८. श्री देवी लाल जांगिड़, अजमेर २९. पं. ईश्वरचन्द्र आर्य, फरीदाबाद ३०. श्री बहादुरसिंह आर्य, फरीदाबाद ३१. श्री घनश्याम, जोधपुर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

ईश्वर पर अविश्वास के कारण तथा ईश्वरत्व की सिद्धि

कन्हैयालाल आर्य

एक बार की बात है कि मैं गुरुकुल आश्रम सलखिया जिला रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के वार्षिकोत्सव में प्रवचन कर रहा था। मेरे प्रवचन का विषय था, ''ईश्वर की प्रत्येक कृति में मंगल होता है, जो हमें दिखाई नहीं देता''। जब मैं प्रवचन करके मंच से उतरा तो एक सज्जन ने मुझसे एक प्रश्न किया, ''महाशय जी! सभी आर्य विद्वान् ईश्वर की कृति को मंगलमय मानते आये हैं, प्रतिदिन न जाने कितने विद्वानों के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व के विषय में प्रवचन दिये जाते रहे हैं, परन्तु क्या कारण है कि ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास समाप्त होता जा रहा है। कई ऐसे कारण हैं जिससे मुझ जैसे आस्तिक को भी ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास हो जाता है।'' उन्होंने कुछ प्रश्न मुझसे किये। मैंने उनके प्रश्नों को सुना और अगले ही प्रवचन में मैंने उनका निराकरण भी किया था। आइये! प्रश्नोत्तर के माध्यम से इस विषय को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं-

प्रश्न - आज समाज में ऐसा हो रहा है कि अपराधी तो पकड़े नहीं जाते, परन्तु निर्दोष और निरपराधी दण्डित हो जाते हैं। ये बातें सुन देखकर लगता है कि ईश्वर का न तो कोई अस्तित्व है और न ही कोई न्याय-व्यवस्था।

उत्तर- मैं यह मानता हूँ कि कई बार ऐसा होता है कि निर्दोष व्यक्ति फँस जाता है और दोषी मुक्त हो जाता है। फँसने वाला व्यक्ति आज की तिथि में निर्दोष है, परन्तु मेरा मानना यह है कि उसने कभी न कभी अपराध किया अवश्य होगा और यह उसका फल है। ईश्वर सर्वज्ञ होने के कारण उसके अपराधों को जानता है, हम नहीं।

परन्तु उसकी **'अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम्'** अर्थात् किये हुए कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है, इसलिए प्रभु की व्यवस्था में हमें सन्देह नहीं करना चाहिये। ईश्वर की न्याय व्यवस्था पूर्ण है, उसमें कटौती बिल्कुल नहीं होती। संसार को तो आप धोखा कुछ देर के लिए दे सकते हैं, परन्तु उस सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी प्रभु को धोखा नहीं दिया जा सकता। लोगों का यह कहना कि अपराधी नहीं पकड़े जाते, परन्तु निर्दोष और निरपराधी दण्डित हो जाते हैं, गलत है। समय आने और पापों के परिपक्व हो जाने पर दण्ड अवश्य मिलता है।

(२) कुछ लोग ईश्वर पर इसलिए विश्वास नहीं करते क्योंकि वह आम तौर पर देखते हैं कि पापी तो साधन-सम्पन्न रहते हैं और पुण्य आत्मायें सदा दुःखी रहती हैं।

इसका उत्तर यह है कि लोग पापियों को सुख में और पुण्यात्माओं को दुःख में देखकर कारण और कार्य का सम्बन्ध लगा देते हैं। वह उसकी पृष्ठभूमि में नहीं जाते। इसे एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। एक व्यक्ति चोरी करके आया और घर आकर सन्ध्या, यज्ञ करने लगा। पुलिस ने उसका पीछा किया। उसको आकर पकड़ लिया। तभी लोगों ने कहना प्रारम्भ कर दिया, ''देखो! बेचारा सन्ध्या, यज्ञ कर रहा था, पुलिस ने अकारण उसको पकड़ लिया।'' बन्धुओ! उसे इसलिए नहीं पकड़ा गया था कि वह सन्ध्या या यज्ञ कर रहा है बल्कि उसके अपराध के लिए उसे पकड़ा गया जो कि उसने कुछ समय पूर्व किया था। लोग जब यह कहते हैं कि सन्ध्या और यज्ञ करने वाले उस पुण्यात्मा को दुःख मिला। यह उनकी धारणा गलत है। वे यह नहीं जानते कि उसे चोरी करने के अपराध में पुलिस पकड़ ले गई।

(३) कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत बार प्रार्थना करने पर भी इच्छा पूरी नहीं होती। इसलिए ईश्वर में अविश्वास उत्पन्न होता है।

प्रार्थना का फल इच्छा की पूर्ति नहीं अपितु प्रार्थना का फल है- अभिमान का नाश, उत्साह की वृद्धि और सहाय का मिलना। मनुष्य जब किसी कठिन कार्य को कर लेता है तो उसको अपनी शक्ति का अभिमान हो जाता है, परन्तु जब वह यह सोचता है कि ईश्वर अधिक शक्तिशाली है तो उसका अभिमान चकनाचूर हो जाता है। जब मनुष्य का ईश्वर में पूर्ण विश्वास होता है तो उसमें उत्साह की वृद्धि होती है और कार्य करते हुए सहायता भी मिलती है।

उपासना से पहाड़ के समान दुःख आने पर मनुष्य घबराता नहीं क्योंकि वह समझता है कि इस कष्ट में भी मेरी भलाई है। हम सबका परमपिता परमात्मा ही हमारे हित को जानता है, हम नहीं जानते। आपत्ति और कष्ट पड़ने पर भी ईश्वर पर दृढ़ विश्वास होता है। ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है, परन्तु हम अज्ञानवश इसे समझ नहीं पाते हैं।

(४) ईश्वर पर अविश्वास का एक कारण यह भी है कि लोग सोचते हैं कि जब हम कोई बुरा कार्य करने का प्रयास करते हैं तो हमारे माता-पिता हमें उसी समय बुरा कार्य करने से रोक देते हैं, परन्तु परमात्मा जो हम सबका पिता-माता-सखा-बन्धु-मित्र सब कुछ है वह हम जब बुरा कार्य कर रहे होते हैं, क्यों नहीं रोकता? यदि उसी समय हमें बुरा कार्य करने से रोक दे, तो हम पाप करने से बच जायेंगे और परमात्मा भी हमें दण्ड देने के कार्य से बच सकेगा। जब हम बुरा कार्य करते हैं, वह रोकता नहीं और जब कर लेते हैं तो हमें दण्ड देने के लिए तैयार हो जाता है इससे ईश्वर पर अविश्वास हो जाता है।

परमपिता परमात्मा भी मर्यादा और अनुशासन में बँधा हुआ है। जिस प्रकार अध्यापक अपने पुत्र को सब कुछ समझा देता है, परन्तु वह उसको स्मरण नहीं रखता तो उसे अनुत्तीर्ण होने का दण्ड भुगतना ही पड़ता है। उसी प्रकार परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आदि में हमें वेद का ज्ञान दे दिया है। क्या ठीक है, क्या गलत है, क्या उचित है, क्या अनुचित है, क्या खाना चाहिये, क्या नहीं खाना चाहिये, कैसा व्यवहार करना चाहिये, कैसा नहीं करना चाहिये आदि सभी कुछ बता देता है और परीक्षा आने पर हम उस पढ़े हुए पाठ का अनुकरण व आचरण न करके विपरीत आचरण करेंगे तो वह परमपिता परमात्मा भी हमारे कर्मानुसार हमें अनुत्तीर्ण (कष्ट, दुःख) रूपी दण्ड को अवश्य प्रदान करेगा। इसलिए यह कहना कि परमात्मा हमें बुरा कार्य करने के समय ही क्यों नहीं रोकता। उसका कारण यह है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। यदि परमात्मा उस समय गलत कार्य करने वाले को रोकता है तो यह वैदिक सिद्धांत 'जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र' का हनन हो जायेगा। इसलिए यह कहना कि जीव को गलत कार्य करने से रोक दे तो उसे दण्ड देने के कार्य से भी बच जायेगा, गलत है। अतः ईश्वर की व्यवस्था अपने आप में पूर्ण है।

(५) ईश्वर अविश्वास का एक कारण यह भी है जब किसी के घर अचानक किसी युवा व्यक्ति या प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है तब व्यक्ति सोचता है, ''मेरे प्रिय पुत्र, पत्नी या प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु हो गई, तेरा क्या गया? क्या तू इन बच्चों को पालेगा?'' इस प्रकार के अनेक प्रश्न परमात्मा में अविश्वास का कारण बनते हैं।

इसका उत्तर यह है कि जो व्यक्ति इस संसार में आया है उसका मरण अवश्य होगा। वे यह नहीं जानते कि प्रकृति और जीवात्मा के संयोग का नाम जन्म है और प्रकृति तथा जीवात्मा के वियोग का नाम मृत्यु है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता २/२७ में स्पष्ट कहा है-

''जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च''

जो उत्पन्न हुआ है वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका जन्म भी अवश्य होगा। जब जन्म के पीछे मृत्यु और मृत्यु के पीछे जन्म लगा हुआ है तो घबराहट और निराशा किसलिए?

जब ईश्वर की ओर से विपत्ति आती है तो समझना चाहिये कि इसमें हमारी भलाई है क्योंकि विपत्तियाँ ही मनुष्य को ऊँचा उठाती हैं। संसार के महापुरुषों पर विपत्तियाँ आई है। क्या भगवान् राम, योगेश्वर कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा बुद्ध और न जाने अनगिनत महापुरुषों के जीवनों में आपत्तियाँ नहीं आई? विपत्तियाँ तो प्रभु का स्मरण कराने के लिए आती हैं। मृत्यु तो वैराग्य और ईशभक्ति के लिए प्रेरित करती है। मृत्यु अभिमाननाशक होती है। इसलिए मृत्यु से डरकर ईश्वर पर विश्वास न करना ठीक नहीं है। इसके अतिरिक्त केवल मूर्ति या मन्दिर में ही भगवान् का होना, अन्यत्र न होने से भी ईश्वर-अविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

इसके अतिरिक्त परिवारों में ईश्वरभक्ति, सन्ध्या, यज्ञ, स्वाध्याय का अभाव होना, जन्म और मृत्यु के रहस्य को न समझना, योग के अष्टांग नियमों की जानकारी न होना और उनके अनुसार आचरण न करना आदि ईश्वर अविश्वास के कारण हैं। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि अपने घरों में साधना, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, ईश्वर-स्मरण का वातावरण बनायें। हमारे विद्वानों का भी कर्त्तव्य है कि वैदिक सिद्धान्तों को उनके जीवन व्यवहार में आने वाले दृष्टान्तों के अनुसार समझायें। ईश्वर के सत्य एवं वास्तविक रूप का बोध करें। हमें भी चाहिये कि हम भी सन्तानों में अच्छे संस्कार दें, तभी हम सबका ईश्वर पर विश्वास भी होगा। प्रभु कृपा करे कि हम इस कार्य में सफल हों। **-शिवाजी नगर, गुरुग्राम, हरि.**

आर्यों के लिये शुभ सूचना

'कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर' छपने के लिये तैयार

कुछ समय पूर्व 'परोपकारी' में सूचना प्रकाशित हुई थी कि पं. लेखराम आर्य मुसाफ़िर के साहित्य 'कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर' को परोपकारिणी सभा प्रकाशित करने जा रही है। इस सूचना को पढ़कर आर्यजगत् में उत्साह का संचार होना स्वाभाविक ही था, जिसके परिणामस्वरूप इस ग्रन्थ को छापने के लिये कई साहित्यप्रेमियों ने सभा को सहयोग भी किया, परन्तु पंडित लेखराम जैसे नाम पर यह सहयोग पर्याप्त मालूम नहीं हुआ। पंडित लेखराम वह नाम है जिसके वैदिक-ज्ञान के सामने विरोधी काँपते थे। ऐसे सिद्धान्तमर्मज्ञ ने अपनी संचित ज्ञान-राशि को लेखबद्ध किया और इस लेखबद्ध ज्ञानराशि को यति शिरोमणि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एकत्रित किया और एक ग्रन्थ निर्मित हुआ, जिसका नाम था 'कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर'। यह ग्रन्थ दो भागों में प्रकाशित हुआ। वर्त्तमान में यह ग्रन्थ दुर्लभ हो गया था। परोपकारिणी सभा ने इसे पुनः प्रकाशित करने का निर्णय लेकर पं. लेखराम को पुनर्जीवित कर दिया है। हमने लेखराम का गुणगान ही सुना है, उनके जीवन को ही पढ़ा है, पर वह इस उच्च पदवी को कैसे पा गये- इसकी सच्ची खबर तो उनके लिखे पन्ने ही बता सकते हैं। इन पन्नों को किताब रूप में छापने के लिये जैसा उत्साह, जैसी उमंग दिखनी चाहिये थी, उसमें अभी न्यूनता ही नज़र आती है।

अब यह ग्रन्थ छपने के लिये प्रेस में भेजा जा रहा है। अच्छे कार्यों का सदैव प्रोत्साहन होना चाहिये, इस दृष्टि से इस पुस्तक में **११०००/-रु.** का सहयोग करने वालों के नाम प्रकाशित किये जायेंगे। **एक लाख रु.** से अधिक का सहयोग करने वालों का चित्र सहित आभार व्यक्त किया जायेगा।

आइये, महर्षि दयानन्द के मिशन के लिये अपना जीवन देने वाले आर्यपथिक पं. लेखराम को केवल शब्दों से याद न करके उन्हें पुनर्जीवित करने में भरपूर उत्साह से सहयोग करें।

ओम्मुनि, मन्त्री, परोपकारिणी सभा

परोपकारी के पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठकगण, सादर नमस्ते!

आप जैसे सहृदय पाठकों से निवेदन है कि आपकी प्रिय पत्रिका हम आपकी सेवा में निरन्तर प्रेषित कर रहे हैं ताकि युगनिर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती के लोकोपकारी एवं धार्मिक सन्देश जन-जन तक पहुँच सकें तथा उन कल्याणकारी विचारों को पढ़कर प्रत्येक पाठक सदाचारी, धर्मप्रेमी एवं वैदिक विचारधारा का अनुयायी बनकर वर्तमान में प्रचलित पाखण्ड, अन्धविश्वास को छोड़कर बुद्धिजीवी, तार्किक एवं सत्यान्वेषी बनकर समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुसंस्कारों से मुक्त रहे।

सज्जनो, हम इस पत्रिका की लाभ-हानि की बात नहीं कर रहे। इस निवेदन में केवल इतना जान लें कि पैसा भी किसी संस्था के प्रचार के लिए आवश्यक है। बहुत से महानुभावों का वार्षिक शुल्क हमें निरन्तर प्राप्त हो रहा है, परन्तु कुछ सदस्यों का शुल्क आता ही नहीं है, वर्षों तक रुका रहता है, पुनरपि उन्हें पत्रिका भेजी ही जाती है। अतः ऐसे सज्जनों से निवेदन है कि परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सदस्यता की रकम जमा कराकर इस पावन पत्रिका के निरन्तर प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देकर इस धर्म के स्रोत को जारी रखने की कृपा करें।

आशा है आप महानुभाव वार्षिक शुल्क भिजवाकर हमारा उत्साह निरन्तर बढ़ाते रहेंगे।

शङ्का समाधान – ३६

डॉ. वेदपाल, मेरठ

शङ्का- १. मोक्ष के बाद आत्मा को शरीर किस कारण मिलता है?

२. शरीर में बद्ध आत्मा और शरीर से मुक्त आत्मा (मोक्षवाली) के गुण-कर्म-स्वभाव में क्या अन्तर है?

३. दो मुक्त आत्माएँ किस प्रकार एक-दूसरे से भिन्न हैं?

-गौरव कुमार लम्ब, बागपत

समाधान- १. ईश्वर के साथ ही जीव/आत्मा तथा प्रकृति भी नित्य हैं। प्रकृति= सत्त्व, रजस, तमस की साम्यास्था/अव्यक्तावस्था है। ईश्वर के ईक्षण-संकल्प से यह अव्यक्त से व्यक्त अवस्था को प्राप्त होती है। ऋग्वेद का निम्न मन्त्र द्रष्टव्य है-

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगे असतः सदजायत।।

ऋ. १०.७२.२

प्रकृति के सूक्ष्म-अव्यक्त परमाणुओं के व्यक्त-कार्यावस्था को प्राप्त कर लेना ही दृश्य जगत् है। इस दृश्य का स्वयं प्रकृति (सत्त्व, रजस, तमस के सूक्ष्म परमाणुओं) के लिए कोई प्रयोजन नहीं है, जिस प्रकार शय्या=पलंग, कुर्सी आदि स्वयं के लिए न होकर किसी अन्य के विश्राम आदि प्रयोजनार्थ होते हैं। उसी प्रकार दृश्य जगत् का प्रयोजन जीव/आत्मा (जो शरीर धारण कर चुका है) के लिए भोग एवं अपवर्ग की सामग्री/साधन उपस्थित करना है। तद्यथा

'प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम्'- योगदर्शन २.१८

जीव/आत्मा के गुण हैं-

'इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्'

– न्यायदर्शन

'प्राणापाननिमेषोन्मेष जीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि' – वैशेषिक

जीव/आत्मा के उपर्युक्त गुणों की अभिव्यक्ति-प्रकाश शरीर (यहाँ शरीर का अभिप्राय स्थूल शरीर से है।) में आत्मा के रहने पर होती है। साथ ही जीव का महत्त्वपूर्ण गुण प्रयत्न है। स्थूल शरीर में कर्मेन्द्रियाँ प्रयत्न गुण की साधिका हैं।

स्थूल शरीर में रहते हुए आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है। स्वतन्त्रतापूर्वक किए कर्मों का परिणाम/फल बन्ध-जन्म-मरण के बन्धन में पड़ना तथा मोक्ष हैं। यह बन्ध-मोक्ष जन्य है। अतः आत्यन्तिक रूप से न तो बन्ध होता है और न ही मोक्ष। इस विषय में सांख्य का मत द्रष्टव्य है-

'नैकान्ततो बन्धमोक्षौ पुरुषस्याविवेकादृत'

– सां. द. ३.७१

अतः मोक्ष के जन्य होने के कारण वह आत्यन्तिक (जन्म-मरण से सदा-सदा के लिए छुटकारा दिलाने वाला) नहीं है। इसलिए जीव/आत्मा प्रयत्न आदि गुणों की कृतार्थता हेतु मोक्ष की अवधिपूर्ण होने पर पुनः स्थूल शरीर धारण करता है।

२. शरीर में बद्ध अर्थात् जीवात्मा के स्थूल शरीर में रहने पर उसमें उपरिलिखित-इच्छा द्वेष आदि गुण व्यक्त रहते हैं। स्वभावतः पवित्र होने पर भी वह **पौनः-पुन्येन** अपवित्र कर्म करते हुए ऐसा मलिन हो जाता है कि सुदीर्घकाल तक (जब तक उन अपवित्र कर्मों का फल निम्न योनियों में भोग न ले) उसे स्वभावतः पवित्र मानना भी कठिन होता है।

मोक्षावस्था में वह दुःख, इच्छा, द्वेष, निमेष, उन्मेष, इन्द्रियान्तर-विकार आदि से रहित होता है।

३. कोई भी पदार्थ परिमाण से मुक्त नहीं होता है। अणु, मध्यम, महत् ये तीन ही परिमाण हैं। पदार्थ इन तीन में से किसी एक परिमाण वाला होता है।

जीव/आत्मा का परिमाण अणु है। तद्यथा-

'उत्क्रान्तिगत्यागतीनाम्' -वेदान्त २.३.१९

अर्थात् स्थूल शरीर से निकलना **उत्क्रमण**, जाना तथा आना होने से स्पष्ट है कि वह **अणु परिमाण** है। मध्यम अथवा महत् परिमाण होने पर यह सम्भव नहीं है।

स्वात्मना चोत्तरयो - वेदान्त २.३.२०

शरीर में भी शरीरी की गति-आगति होती है। आचार्य शङ्कर का भाष्य द्रष्टव्य है-

"आन्तरेऽपि शरीरे शारीरस्य गत्यागती भवतः।
तस्मादप्यस्याणुत्वसिद्धिः।"

अर्थात् शरीरी (आत्मा) की आन्तर शरीर में गति-आगति होती है। इससे भी वह अणु है।

इस विषय में कौषीतकि, बृहदारण्यक, तथा मुण्डक आदि उपनिषद द्रष्टव्य हैं।

मोक्ष अवस्था को प्राप्त करने वाली आत्मा मुक्ति में भी अणु परिमाण ही रहेगी। दूसरी मुक्त आत्मा भी अणु परिमाण ही होगी। साथ ही दोनों द्वारा अधिगत ज्ञान तथा कृत प्रयत्न भी पृथक्-पृथक् ही रहेंगे।

अतः किन्हीं दो मुक्तात्माओं का मुक्ति का आनन्द एवं अवधि भिन्न-भिन्न होते हैं। इस विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत निम्नवत् है-

"...जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है।" -सत्यार्थप्रकाश, समु. ९

अवधि के सन्दर्भ में निम्न सूत्र भी द्रष्टव्य है-

'यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणाम्'

मुक्तात्माओं के आनन्द एवं अवधि तथा उनका अणु परिमाण उनके भेद को स्पष्ट करते हैं।

जागृतिविहार, मेरठ, उ.प्र.।

पाठकों की प्रतिक्रिया

सितंबर (द्वितीय) २०१८ की परोपकारी पत्रिका, पृ. २६ के साक्ष्य पर मेरा कहना यह है कि श्री शिवनारायण उपाध्याय का अनुमान सत्योन्मुख नहीं है।

उनका कहना कि भाद्र शुक्ल नवमी संवत् १८८१ (गुजराती) में भी ईस्वी १८२४ ही होगा, आशंका और अनुमान पर आधारित है। अस्तु उनकी टिप्पणी का गलत होना स्वाभाविक है।

सत्य यह है कि भाद्र शुक्ल नवमी १८८१ (गुजराती) में ईस्वी सन् १८२५ है (होगा की बात नहीं, है)। यह बात हम उस दिन के दैनिक पञ्चाङ्ग को देख कर कह रहे हैं, आशंका और अनुमान के आधार पर नहीं।

ज्ञातव्य है कि कार्तिकीय विक्रम संवत् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को परिवर्तित होता है। भाद्र शुक्ल ९ के भी लगभग ५१ दिनों बाद।

ईस्वी १८२५ को कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा ११ नवम्बर १८२५ को थी। इस प्रकार १० नवम्बर १८२५ को चैत्रीय/कार्तिकीय संवत् १८८२ और १८८१ अलग अलग ही थे जबकि शुक्रवार, ११ नवम्बर १८२५ को चैत्रीय एवं कार्तिकीय संवत् दोनों ही १८८२ अर्थात् एक ही हो गये थे। यह सब एक गणितीय सत्य है।

- आचार्य दार्शनेय लोकेश

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित ऋषि मेले में आप सभी आमन्त्रित हैं।

१६, १७, १८ नवम्बर २०१८, **सम्पर्क**- ०१४५-२४६०१६४

आयुर्वेद द्वारा कैंसर की सफल चिकित्सा (स्वानुभूत)

आनन्ददेव शास्त्री (पूर्व प्रवक्ता) दिल्ली सरकार

अक्टूबर २०१५ में मुझे पेट में कुछ कष्ट रहने लगा, तब मैंने झज्जर के एक अस्पताल में अल्ट्रासाउण्ड कराया। अल्ट्रा साउण्ड से पता चला कि, गदूद बढ़ने से पेशाब की थैली में २० एम.एम. की पथरी बन गई है। इसी कारण पेशाब में रुकावट आने लगी है। तब किसी की सलाह पर मैंने, सोनीपत के एक वैद्य से आयुर्वेदिक औषधि लेनी प्रारम्भ की। कुछ महीने के बाद मैंने वह औषध भी लेनी बन्द कर दी। गदूद बढ़ने की बात तो मेरे ध्यान से बिल्कुल उतर गई। इस प्रकार असावधानी में एक वर्ष बीत गया तथा पेशाब की रुकावट बढ़ गई। पेशाब की थैली वाली पथरी ने थैली में घाव कर दिया तथा पेशाब में कभी-कभी रक्त भी आने लगा। अक्टूबर २०१६ में जब मैं डॉ. धर्मवीर जी की अन्त्येष्टि पर अजमेर गया, उस समय मेरी स्थिति काफी खराब हो चुकी थी। अजमेर से आते ही मैंने महाराज अग्रसेन हस्पताल, पंजाबी बाग, देहली में गदूद तथा पथरी का ऑपरेशन कराया। किन्तु ऑपरेशन के कुछ समय बाद ही फिर पेशाब में रक्त का असर दिखाई देने लगा। तब मैंने फिर डॉक्टर के पास जाकर इसको ठीक करने को कहा, किन्तु डॉक्टर ने कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया तथा कहा कि ''खूब पानी पीयो, ठीक हो जाओगे''। जब ऐसा करते कई महीने बीत गये, किन्तु रोग में कोई सुधार नहीं आया, तब मैं फिर अग्रसेन अस्पताल में उसी डॉक्टर के पास गया, तब डॉक्टर ने एक बार फिर ऑपरेशन का ड्रामा कर दिया तथा पानी की २०-२५ बोतल चढ़ाकर रंग साफ कर दिया, किन्तु कुछ समय बाद ही पेशाब का रंग फिर बदल गया। दूसरी बार ऑपरेशन करते समय डॉक्टर ने घाव में से टुकड़ा लेकर टेस्ट कराया तथा उसे इस बात का पता चल गया कि मुझे गदूद में कैंसर है, किन्तु उस डॉक्टर ने न तो कुछ इलाज ही किया तथा न ही हमें इस विषय में कुछ बताया तथा मुझे फिर ज्यादा पानी पीने का उपदेश देकर वापिस भेज दिया। किन्तु कैंसर के कारण पेशाब में खूब का इसर फिर भी बना रहा। अन्त में बिल्कुल लाचार होकर मार्च २०१८ में हमने निश्चय किया कि अबकि बार दूसरा डॉक्टर बदलते हैं। तब मैं तथा छोटा बेटा प्रवीण कुमार, एक्शन कैंसर हॉस्पिटल, पश्चिम विहार, दिल्ली में गये। वहाँ डॉक्टर समीर खन्ना ने देखते ही बता दिया कि तुम्हारे तो कैंसर है तथा तुमने बहुत देर कर दी है। डॉ. खन्ना ने मुझे कैंसर अस्पताल में दाखिल कर लिया। मेरे सभी आवश्यक टैस्ट करवाए तथा दो ऑपरेशन किये। इसके बाद पेशाब में खून आना बन्द हो गया तथा मुझे १०-१५ दिन की दवाई देकर अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया। बेटे के पूछने पर डॉक्टर ने कहा कि किमो थैरेपी करवा लो, कैंसर चौथे चरण में है। घर ले जाकर सेवा करो और कोई उपाय नहीं है। चौथे चरण की बात मुझे नहीं बताई गई थी तथा यह भी बताया कि कैंसर गदूद में तथा ऊपर शरीर में हड्डियों में भी पहुँचा हुआ है। स्मरण रहे कि चौथे चरण में कैंसर के पहुँच जाने पर रोगी बचता नहीं है। यह जानकर प्रवीण को बड़ा धक्का लगा, किन्तु हस्पताल में हमारे बैड के दोनों तरफ ''किमो थैरेपी'' लिये हुए रोगी थे, जिनकी हालत नाजुक थी। अतः हमने ''किमो थैरपी'' की बजाय आयुर्वेद की चिकित्सा करने का निश्चय किया। तब प्रवीण ने नैट पर राजीव दीक्षित तथा एक अन्य भीलवाड़ा के वैद्य की दवाई पढ़ी तथा तीसरी दवाई गुरुकुल झज्जर फार्मेसी की भी सम्मिलित की। इन सभी दवाइयों को लेकर पूरे दिन का कार्यक्रम दवाई लेने का बनाया । इनका एक दिन का विवरण इस प्रकार है-

१- प्रातः उठते ही रोग ठीक होने के लिये ईश्वर से प्रार्थना। (एक बार अग्रसेन हस्पताल पश्चिम विहार, दिल्ली के यूरोलोजी के डॉक्टर आर. के. शर्मा ने भी मेरे सामने एक धनी आदमी को कहा था-कि ऑपरेशन तो मैंने कर दिया है, ठीक होने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करो।)

२- प्रातः ही एक गिलास पानी खाली पेट पीना।

३- इसके आधा या एक घन्टे के बार प्राणायाम तथा दो-चार आसन करने।

४- प्राणायाम से कुछ देर बार, गोमूत्र, हल्दी चूर्ण तथा पुनर्नवा चूर्ण से बना पेय १ कप पीना। (इसके तैयार करने की पद्धति यह है कि ३ कप गोमूत्र लें, डेढ़ चम्मच छोटी हल्दी का चूर्ण लें, १ चम्मच पुनर्नवा चूर्ण लें। सबको उबाल, ठण्डाकर इसमें तीन छोटी चम्मच शहद डाल लें। यदि कैंसर गदूद का न हो तो पुनर्नवा चूर्ण न मिलायें। बची औषधी फ्रिज में रख दें।)

५- इसके आधा या एक घन्टे बाद भोजन के साथ सब्जी, रोटी, लस्सी, तुलसी के ५-६ पत्ते, लहसुन की तीन कलियाँ लें तथा यदि कैंसर हड्डियों में भी पहुँच चुका हो तो दही में एक चुटकी खाने का चूना डालकर अच्छी तरह मिलालें, अन्यथा खाँसी उठ सकती है।

६- भोजन के आधा या एक घन्टे बाद गुरुकुल झज्जर फार्मेसी का विषनाशकासव, विडंगारिष्ट तथा यदि कैंसर गदूद का हो तो गोक्षुरासव भी ले लें। इन बोतलों में से २-२ ढक्कन दवाई लेकर बराबर का पानी मिलाकर पियें।

७- इसके एक घन्टे बाद १. गिलोय डेढ़ फुट लम्बी टहनी, २. ग्वारपाठा (एलोवीरा) का गूदा २ चम्मच, ३. पपीते का पत्ता ७-८ इंच, कुछ पपीते का डंठल भी ले लें, ४. नीम के १० पत्ते, ५. पीपले के ६-७ पत्ते, ६. शीशम के २० पत्ते, ७. तुलसी के ७-८ पत्ते, ८. पत्ता गोभी की एक परत, ९. कद्दू (पेठा भी कहते हैं) सब्जीवाले के ७-८ बीज, १०. अलसी के बीज-१ छोटी चम्मच, ११. कचनार का छिलका २ छोटी चम्मच, १२. नागरमोथा ४-५ पीस १३. शिलाजीत मक्खी से भी कम भाग।

इन सबको लगभग डेढ़ किलो पानी में डालकर उबालें, अच्छा उबलने पर तथा भगोने में पानी १ इंच कम होने पर इस काढ़े के ठंडा होने पर १ कप या डेढ़ कप सेवन करना।

८- दोपहर के खाने में गाय के दूध से बनी साबूदाने की खीर का निरन्तर सेवन करना। इसके साथ कुछ अखरोट, बादाम, काजू का भी सेवन करना।

९- दोपहर के खाने के एक घन्टा बाद ६ नम्बर वाली गुरुकुल झज्जर फार्मेसी की दवाई एक बार फिर लें।

१०- इसके आधा या १ घन्टा के बाद ७ नम्बर का काढ़ा फिर लें।

११- इस दौरान किसी समय उगा हुआ अनाज मूंग-आदि थोड़ी मात्रा में सेवन करें।

१२- गेहूं के ताजे पौधे काट कर २०-३० ग्राम लेकर, कूटकर उसमें थोड़ा-सा पानी मिलाकर निचोड़कर १ कप के लगभग सेवन करें।

१३- अंगूर या मुनक्का के बीज थोड़े-थोड़े पीस शहद में लेना।

१४- गुरुकुल झज्जर फार्मेसी का विषनाशक चूर्ण १ छोटी चम्मच तथा नीम का छिलका १-१ इंच के दो पीस, १०० ग्राम के लगभग पानी में भिगो दें। तीन-चार घंटे के बाद छानकर उस पानी से गुरुकुल झज्जर फार्मेसी की विषनाशक वटी १ गोली, कैशोर गुग्गुल १ गोली तथा यदि कैंसर गदूद में हो तो इसमें गोक्षुरादि गुग्गुल की भी एक गोली लेकर उसे पानी के साथ पीस कर लेना।

१५- शाम के भोजन में कुछ सलाद भी लें।

१६- भोजन के लगभग १ घन्टा बाद थोड़ा गाय का दूध भी लें।

यदि इन सब दवाइयों का कोई लगन से प्रतिदिन सेवन करेगा तो चौथे चरण (चौथी स्टेज) का असाध्य कैंसर भी छः महीने में ठीक हो जायेगा।

१८- ऊपर की औषधादि के अतिरिक्त सेव, सन्तरा, अनार, पपीता आदि का भी यथासम्भव सेवन करना।

१९- इनमें से कड़वी दवाइयों से तो कैंसर नष्ट होता है तथा खीर, मेवे, दूध, फल आदि के सेवन से नए सैल उत्पन्न होते हैं।

मैं इन सभी चीजों का लगातार छः महीने तक लगन से सेवन किया। इससे मेरा आठ किलो वजन बढ़ गया तथा शरीर के सभी दर्द मिट गये।

मैं २७-०९-२०१८ तथा २९-०९-२०१८ को, एक्शन कैंसर हस्पताल, पश्चिम विहार दिल्ली में डॉ. समीर खन्ना के पास गया तथा उनसे कैंसर का टैस्ट फिर कराने के लिये प्रार्थना की। जब डॉ. खन्ना ने मेरे कागज देखे तब उन्हें बड़ा गुस्सा आया तथा बोले तूने मेरी दवाई नहीं ली तथा छः महीने के बाद आए हो। तब मैंने डॉ. साहब से कहा कि मैंने आयुर्वेद से इलाज कराया है। आयुर्वेद का नाम सुनकर डॉक्टर साहब भड़क उठे तथा बोले- जाओ, आयुर्वेद वालों से ही टैस्ट करा लो। तब मैंने कहा-कि आयुर्वेद में टैस्ट नहीं होते तथा मेरा ८ किलो से ज्यादा वजन बढ़ गया है, मैं बाइक चलाता हूँ, शरीर में कोई दर्द नहीं है। तब डॉ. साहब ने एक खून का टैस्ट तथा दूसरा पेट सीटीस्कैन लिख दिया। दो-तीन दिन के बाद जब हम टैस्ट रिपोर्ट लेकर डॉ. साहब के पास गये तो रिपोर्ट को देखकर डॉ. साहब को कुछ जवाब नहीं सूझा तथा एक बार पुरानी तथा एक बार नयी रिपोर्टों को पलटने लगे, क्योंकि दोनों रिपोर्टों के अनुसार चौथे चरण में पहुँचा हुआ गदूद का कैंसर छः महीने की आयुर्वेद की दवाईयों के सेवन से पूर्ण रूप से ठीक हो चुका था। तब डॉ. साहब बोले कि हम तो आयुर्वेद को नहीं मानते, फिर भी तुम्हारी बात सच है तथा मैं गलती पर था। डॉ. साहब शर्मिन्दगी महसूस करते वहाँ से तुरन्त उठ गये।

सारांश- यदि किसी व्यक्ति को कैंसर है तथा उसने ''किमो थैरेपी'' नहीं ली है तथा वह इन दवाइयों का छः महीने पूरी लगन से सेवन करे तो उसका कैंसर चौथे चरण तक का अवश्य ही ठीक हो जायेगा। यदि किसी व्यक्ति को इस बात पर विश्वास न हो तो मेरे पास रखे अस्पताल के कागज इसके प्रमाण हैं। कोई भी व्यक्ति उन्हें मेरे पास आकर देख सकता है। **आर्यनगर, झज्जर, हरियाणा। ९९९६२२७३७७**

आर्यजगत् के समाचार

१. अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ- सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत, हरियाणा द्वारा आयोजित 'अद्भुत अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' का शुभारम्भ आचार्य ज्ञानेश्वर-रोजड़ की प्रेरणा से कैप्टन श्री अभिमन्यु-वित्त मन्त्री, हरियाणा सरकार के सान्निध्य में १ अक्टूबर २०१७ को गाँव बसई, गुरुग्राम, हरियाणा में हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सत्यपालसिंह आर्य-मन्त्री भारत सरकार, विशिष्ट अतिथि श्री सुरेशचन्द्र आर्य-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री सुरेन्द्र आर्य-चेयरमैन जे.बी.एम. ग्रुप, श्री विनय विद्यालंकार-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, आचार्य सत्यजित् एवं आचार्य श्री संदीप-रोजड़ आदि भी समापन समारोह में पधारे व उद्बोधन प्रदान किया।

२. आर्यसमाज सुजानगढ़ एक आवश्यक मीटिंग आयोजित कर निर्णय लिया कि आर्यसमाज के वयोवृद्ध आर्य श्री ब्रह्मप्रकाश लाहोटी को आर्यसमाज सुजानगढ़ का आजीवन प्रधान नियुक्त किया जाए, जिसे सभी सदस्यगणों ने ध्वनि मत से सहमति प्रदान की। आर्यसमाज के व्यवस्थापक का कार्यभार श्री मदनगोपाल सोनी आर्य को नियुक्त किया गया।

३. छात्रवृत्ति समारोह- मानव सेवा प्रतिष्ठान, हुमायूँपुर, नई दिल्ली गत २० वर्षों से विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने तथा वैदिकधर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसारार्थ जीवनदानी, विद्वान्, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करने के कार्य में संलग्न हैं। उसी शृंखला में इस वर्ष भी यह छात्रवृत्ति प्रदान समरोह दि. ४ नवम्बर २०१८ को दीनबन्धु छोटुराम भवन, केशवपुरम् दिल्ली-११००३५ में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के सान्निध्य में सम्पन्न होगा।

४. विभिन्न कार्यक्रम- महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्टी गेट झज्जर में वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन कार्यक्रम १० सितम्बर २०१८ को हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एच.एस. यादव, मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता आर्य नेता आचार्य यशवीर बोहर रहे। लगभग ७५ छात्र-छात्राओं ने हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का शानदार प्रदर्शन किया।

५. डॉ. वेदपाल जी सम्मानित- दि. ७ अक्टूबर २०१८ को बीपीटीपी की सोसायटी सैक्टर-८५, ब्लॉक-ए के आवासीय पार्क, ग्रेटर फरीदाबाद, हरियाणा में ब्र. राजेन्द्रार्य: के सत्प्रयास से वैदिक वाङ्मय के विद्वान् प्राच्य विद्यानुसन्धानम् के सम्पादक एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर के सदस्य के ब्रह्मत्व में 'देवयज्ञ एवं आध्यात्मिक' सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं. राजेश शास्त्री फरीदाबाद के मधुर भजनोपदेश तथा कन्या गुरुकुल सासनी की प्राचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार का प्रवचन हुआ। डॉ. वेदपाल जी को आर्यसमाज शक्तिनगर के पूर्व प्रधान श्री एस.एन. सिंह एवं सोसायटी के अध्यक्ष श्री मुकेश मिश्र ने रु. १०,०००/- की राशि प्रदान कर सोसायटी की तरफ से सम्मानित किया।

६. संस्कृति बचाने के लिये धरना- आर्यसमाज हापुड़ के प्रधान श्री आनन्दप्रकाश आर्य के नेतृत्व में आर्य महिला एवं पुरुषों ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा धारा ३७७ व ४९७ को समाप्त कर भारतीय सनातन संस्कृति को समाप्त करने के लिये दिये गये निर्णय के विरोध में एक ज्ञापन माननीय प्रधानमन्त्री भारत सरकार के नाम उप-जिलाधिकारी हापुड़ को दिया। महिला प्रधाना श्रीमती माया आर्या, मन्त्राणी श्रीमती अलका अग्रवाल ने भी इस विषय पर अपने विचार रखकर महिला समाज की ओर से रोष व्यक्त किया।

शोक समाचार

७. महारानी पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ के अधिष्ठाता, हिंदी के महान् साहित्यकार, महान् देशभक्त एवं महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी **स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती** का दि. १६ अक्टूबर २०१८ को देहावसान हो गया है। उनका निधन आर्यसमाज ही नहीं अपितु हिंदी साहित्य जगत् की एक महती क्षति है। **परोपकारिणी सभा की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।**

८. आर्य जगत् के तपस्वी साधु आर्य भजनोपदेशक **महात्मा जलेश्वर मुनि वानप्रस्थी** का दि. १६ अक्टूबर २०१८ को ९५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। महात्मा जी स्वभाव से हँसमुख , मिलनसार, साधु थे। सत्य सनातन वैदिक धर्म का ऋषिकल्प सत्संग आर्यसमाज ही उन्हें प्रिय था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों में वर्णित वैदिक सिद्धान्तों का अपनी रसमयी वाणी से प्रचार- प्रसार करके पुण्यलाभ प्राप्त किया करते थे।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को उत्तम नवजीवन रूप सद्गति व शोकसन्तप्त परिवार व समाज को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

परोपकारिणी सभा की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

पृष्ठ संख्या ७ का शेष भाग...

विचार नहीं आता, आधे के बारे में हमको विश्वास नहीं होता। यदि इस आधे के बारे में विश्वास हो, तो जहाँ-जहाँ विश्वास है वहाँ-वहाँ हमें भय नहीं लगता। व्यक्ति घर से गया है, मालूम है, लौटकर आएगा यह भी मालूम है। आज सूरज छिपा है मालूम है, कल निकलेगा यह भी मालूम है। बच्चा स्कूल गया है मालूम है, लौटकर आएगा यह भी पता है। तो जिस रास्ते का पता है, लौटकर आने का भरोसा है, विश्वास है, वहाँ हमें दु:ख नहीं होता। लेकिन मृत्यु के बाद क्या होता है, कैसे आता है, कौन आता है इसका हमको पता नहीं है इसलिए हमको दु:ख होता है। हमारी उस हर यात्रा में दु:ख नहीं होता, जिसमें हमें लौट कर आने का भरोसा होता है-चाहे वह विद्यालय की हो, पढ़ने की हो, सेवाकाल की हो, चाहे भ्रमण की हो, देश-विदेश में काम करने की हो। जहाँ-जहाँ लौटकर आने की बात हमारे लिए पक्की है, वहाँ-वहाँ हमें दु:ख, कष्ट, किसी तरह की पीड़ा नहीं होती। हमें पता है, यह व्यक्ति जा रहा है, वहाँ जाएगा, वहाँ रहेगा, कार्य करेगा, फिर लौटेगा। तो लौटकर कब आएगा, नहीं आएगा यह पता नहीं होने के कारण हमें दु:ख होता है।

हमारी जो जन्म से मृत्यु की यात्रा है इसका तो हम साक्षात्कार कर लेते हैं, इसके साक्षी हो जाते हैं, लेकिन मृत्यु से जन्म की यात्रा हमारी आँखों से ओझल रहती है, यदि इसमें विश्वसनीयता आ जाए, यह हमारे मन में धारणा पक्की हो जाए कि जो मरा है, वह आत्मा नहीं मरा, यह शरीर मरा है, शरीर नष्ट हुआ है और ये आत्मा तो, जैसे इसने शरीर को छोड़ा है वैसे ही इसको दूसरा शरीर मिलेगा तो फिर कष्ट, दु:ख नहीं होगा। यहाँ दोनों स्थानों पर एक शब्द का प्रयोग हुआ है ध्रुवम्। जो बना है उसका निश्चय विनाश होगा, उसकी मृत्यु होगी। वैसी ही शब्दावली का प्रयोग दूसरे आधे के लिए किया गया-**ध्रुवं जन्म मृतस्य च**। जो मर जाएगा उसका जन्म निश्चित है इसलिए यह निश्चित हो जाए कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है और जिसकी मृत्यु है उतना ही निश्चित उसका जन्म है, तो हमें आत्मा की नित्यता का बोध हो जाएगा, हमें आत्मा की नित्यता का विश्वास हो जाएगा।

मृत्यु के समय जो हमारा दु:ख है रोना है, कष्ट है वह किसके लिए? आत्मा के लिए या शरीर के लिए? यदि शरीर के लिए होता तो हम सदा उसे अपने पास रख सकते हैं। हमारे पास नहीं रहने वाली चीज तो आत्मा है। यदि आत्मा के लिए कष्ट है तो नियम यह कहता है कि आत्मा नष्ट ही नहीं होता, आत्मा समाप्त ही नहीं होता, आत्मा कभी मरता ही नहीं, फिर रोना किसके लिए? यदि शरीर के लिए है तो शरीर हमारे कब्जे में है, हमारे अधिकार में हैं, हमारे पास है। जब तक शरीर है, कम से कम तब तक तो रोने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन ऐसा तो हैं नहीं। उस शरीर को हम शरीर के रूप में रखते हैं, फिर उसके चित्र के रूप में रखते हैं, उसकी मूर्ति के रूप में रखते हैं, किसी न किसी रूप में हमारे पास बहुत समय तक रह सकता है। लेकिन हमारा रोना तो शरीर के रहते भी होता है। तो क्या आत्मा के लिए है? आत्मा मरता ही नहीं है इसलिए रोना व्यर्थ हो जाता है। इस रहस्य को समझाने के लिए श्रीकृष्ण ने कहा-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्ये अर्थे न त्वं शोचितुम् अर्हसि।।

यह तत्त्व जिसकी समझ में आता है उसको कभी भी शोक नहीं होता है।

ऋषि दयानन्द ने कहा था

विद्वान् एकमत हो प्रीति से वर्तें

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़, सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें-वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों (साधारण जनों) में विरोध बढ़कर अनेकविध दु:ख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। (स. प्र. भू.)

ऋषि मेला – २०१८

स्थान – ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

कार्यक्रम

शुक्रवार, दिनांक १६ नवम्बर, २०१८

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

ब्रह्मा –डॉ. विनय विद्यालंकार

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से ११.०० तक – **ध्वजारोहण व उद्घाटन सत्र**

११.०० से १२.३० तक – **वेद में राष्ट्र की अवधारणा**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक –**विश्व कल्याण और आर्यसमाज**

भजन–प्रवचन–सम्मान

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **महिला उत्थान और आर्यसमाज**

भजन–प्रवचन–सम्मान

शनिवार, दिनांक १७ नवम्बर, २०१८

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद–प्रवचन

ब्रह्मा – डॉ. विनय विद्यालंकार

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **मानव निर्माण में योग की भूमिका**

भजन–प्रवचन–सम्मान

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **पुनर्जागरण आन्दोलन और महर्षि दयानन्द, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **आ. धर्मवीर–वेद–प्रचार सम्मेलन**

भजन–प्रवचन–सम्मान

रविवार, दिनांक १८ नवम्बर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति**,

०९.३० से १०.०० तक – वेद–प्रवचन

ब्रह्मा–डॉ. विनय विद्यालंकार

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **समाज सुधार में युवाओं की भूमिका, भजन–प्रवचन**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **वर्तमान में गुरुकुलों की प्रासंगिकता, भजन एवं प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

वेद–गोष्ठी

विषय : षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

१६ नवम्बर : उद्घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक

: द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक

१७ नवम्बर : तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक

: चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक

१८ नवम्बर : समापन सत्र

कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन संभव है।

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानंद उद्यान (गुरुकुल आश्रम), जमानी, इटारसी, म.प्र. के तत्त्वावधान में दिनांक १९ अक्टूबर को क्षेत्र की असहाय विधवा महिलाओं को अन्न वितरण किया गया। यह अन्न-वितरण ब्रह्मचारी आचार्य नंदकिशोर की प्रेरणा से, श्री यशपाल आर्य, दिल्ली के सौजन्य से किया गया, जिसमें क्षेत्र की १५० विधवा महिलाओं को लाभ पहुंचाया गया। इस कार्य की सम्पूर्ण व्यवस्था जमानी आश्रम के व्यवस्थापक आचार्य सत्यप्रिय आर्य द्वारा की गई। इसके साथ-साथ यज्ञ एवं सत्संग का भी आयोजन किया गया।

महर्षि दयानंद उद्यान (गुरुकुल आश्रम), जमानी के ही तत्त्वावधान में
क्षेत्र की आदिवासी कन्याओं के लिए भोजन व्यवस्था भी की गई।

आर जे/ए जे/80/2018-2020 तक प्रेषण : 30-31 अक्टूबर 2018 आर.एन.आई. ३९५९/५९

अंतरराष्ट्रीय विश्व पुस्तक मेला २०१९ में परोपकारिणी सभा मे तत्त्वावधान में आर्यों की ओर से सत्यार्थ प्रकाश का नि:शुल्क वितरण।

आप अपनी ओर से, अपने नाम से सत्यार्थ प्रकाश का वितरण करें।
१०० रु. प्रति पुस्तक के अनुसार इस पुनीत कार्य में सभा को अपना सहयोग दें।

आप धनराशि चेक, ड्राफ्ट या ऑनलाइन भी भेज सकते हैं

खाताधारक- परोपकारिणी सभा, अजमेर

बैंक (बचत खाता)- 091104000057530

IDBI Bank, पावर हाउस के सामने , जयपुर रोड, अजमेर

IFSC- IBKL0000091

बैंक (बचत खाता)- 10158172715

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार , अजमेर

IFSC- SBIN0007959

धनराशि भेजने के बाद पत्र या फोन से सूचना अवश्य दे दें-

पता- परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर- 305001

Ph. 0145 - 2460164

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,